अनुक्रमणिका

विषय	पत्राङ्क

प्रस्तावना

सामान्य रीते हालना बौद्धोना बे भाग पडे छे—उत्तरना बौद्धो अने दक्षिणना बौद्धो. टिबेट, मंगोलीया, चीन अने जापानना बौद्धो उत्तर-बौद्धो कहेवाय; अने सिलोन, ब्रह्मदेश, सियाम अने काम्बोडीयाना बौद्धो दक्षिण बौद्धो कहेवाय. उत्तरना बौद्धो पोताने महायानना अने दक्षिणना बौद्धोने हीनयानना कहे छे.

बौद्ध ग्रंथोमां जीवन्मुक्ति अथवा 'बोधि' त्रण प्रकारनी मनाय छे. ते आ प्रमाणे—'श्रावकबोधि,' 'प्रत्येक बुद्धबोधि' अने 'सम्यक्सम्बोधि.' 'श्रावक' एटले बुद्ध पासे धर्म शीखनार. तेओनी जीवन्मुक्तिने 'श्रावकबोधि' कहे छे. 'प्रत्येक बुद्ध' एटले गुरु पासे उपदेश लीधा विना स्वप्रयत्नथी बुद्ध थाय छे ते, पण तेनामां बीजा लोकोने तारवानुं सामर्थ्य नथी होतुं. ते अरण्य वगेरे कोइ पण एकान्त स्थळमां एकलो रही विमुक्ति-सुख अनुभवे छे. तेनी 'बोधि' ने 'प्रत्येक बुद्धबोधि' कहे छे. 'सम्यक्-सम्बुद्ध' एटले गुरु विना जे सर्व धर्मने जाणे छे, अने पोताना सामर्थ्यथी बीजानो पण उद्धार करे छे. आवा स्वयंबुद्धो घणा छे. तेमां आ कल्पना छेल्ला स्वयंसंबुद्ध गौतम बुद्ध छे.

महायान पंथना अनुयायीओने पहेला बे 'बोधि' पसंद नथी; तेमने तो 'सम्यक्सम्बोधि' ज जोइए. अनेक जन्मोमां असंख्य प्राणीओनुं हित साधी अनंत काळ पछी सम्यक्संबुद्ध थइ मोक्ष मेळववो ए तेमनुं ध्येय छे. शान्तिदेवाचार्य कहे छे —

एवं सर्वमिदं कृत्वा यन्मयासादितं शुभम् ।
तेन स्यां सर्वसत्त्वानां सर्वदुःखप्रशान्तिकृत् ॥
मुच्यमानेषु सत्त्वेषु ये ते प्रामोद्यसागराः ।
तैरेव ननु पर्याप्तं मोक्षेणारसिकेन किम् ॥[1]

(आ प्रमाणे आ बधुं करीने मने जे पुण्य मळ्युं छे तेना वडे सर्व प्राणीओना सर्व दुःखनी शान्ति करनार थाउं ! सर्व प्राणीओनो उद्धार थतां तारामां जे प्रमोदसागर उछळे छे ते बस नथी ! अरसिक मोक्षनुं शुं !) आ रीते सर्व प्राणीओनो उद्धार करीने ज आपणे मोक्षमां जवुं जोइए; अने आथी ज पोतानो पंथ महायान पंथ छे एम उत्तर देशोना बौद्धो माने छे; अने दक्षिण देशोना बौद्धोने तेओ हीनयान कहे छे, कारण के तेओ फक्त पोताना दुःखो ज दूर करवा मथे छे; अर्हत् पद मोक्ष मेळववा सारु ज तेमनुं ध्येय होय छे.

दक्षिणना बौद्धसाहित्यमां 'महायान' अने 'हीनयान' ए शब्दो बिल्कुल मळता नथी. पोताना पंथने तेओ 'थेरवाद' (स्थविरवाद) पंथ कहे छे. बुद्धना परिनिर्वाण पछी त्रण महिने महाकाश्यप, आनंद, उपालि इत्यादि महास्थविरोए राजगृहमां एकठा थइ बुद्धना उपदेशनो संग्रह कर्यो. सो वरस पछी वैशाली नगरीमां 'यश' स्थविरना प्रयासथी भिक्षु-संघनी मोटी सभा मळी; अने तेमां धर्मग्रंथोनुं पुनः संशोधन करवामां आव्युं. सार्वभौम अशोकना समयमां पण मोग्गलिपुत्त तिस्स स्थविरना अध्यक्षपणा नीचे एक मोटी सभा भेगी थइ अने तेमां त्रीजी वार बुद्धना उपदेशोनुं संशोधन करवामां आव्युं. आ परंपरा दक्षिणना बौद्धोमां चालती होवाथी तेओ पोताने स्थविरवादी कहेवडावे छे. दीपवंस अने कथावत्थु-अट्ठकथामां अशोकना समये बौद्धोना अढार भेद थया एवुं वर्णन छे. तेमां जेने महासंघिक कहे छे तेज महायान पंथना अनुयायीओ

१. बन्ने श्लोको बोधिचर्यावतारमांथी लीधेला छे. पहेलो त्रीजा परिच्छेदमां छे, अने बीजो दशमा परिच्छेदमां होवो जोइए.

हतो एवु आधुनिक पण्डितो अनुमान करे छे. परंतु आ महासंघिकोनी बाबतमां सविस्तर उल्लेख पालिसाहित्यमां मळता नथी.

स्थविरवाद पंथना अनुयायीओने जेम त्रिपिटक ग्रंथ पूज्य छे तेम महायान पंथना अनुयायीओने पण छे. फरक केवळ ध्येय पूरतो छे. त्रिपिटक ग्रंथ मूळ पालि भाषामां छे. तेना सुत्तपिटक, विनयपिटक तथा अभिधम्मपिटक एवा त्रण भाग छे. महायान पंथीओए आ ग्रंथोनो संस्कृत भाषामां अनुवाद करी तेमां घणुं नवुं दाखल करी दीधुं छे; अने पोताने अनुकूळ रीते तेनो अर्थ बेसाडवा प्रयत्न पण कर्यो छे. बुद्ध भगवान्ना अने तेमना प्राचीनतम अनुयायीओना शुद्ध अने सरळ विचारो पालिभाषाना त्रिपिटक ग्रंथोमां छे. अने आ ग्रंथोना अभ्यासथी महायान पंथना ग्रंथोनो अभ्यास पण सुगम थाय छे ए बाबतमां विद्वानोनो एकमत छे.

त्रिपिटक ग्रंथोनुं सामान्य स्वरूप आपवानुं आ स्थळ नथी. तेने माटे एक स्वतंत्र लेख लखवो पडे. अहिंआ अमारे अभिधर्म पूरतो ज विचार करवानो छे. अभिधर्मना धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक अने पट्ठान एवां सात प्रकरणो छे. आ सर्वां बुद्धे ज उपदेश्यां छे एवी श्रद्धाळु लोकोनी मान्यता छे. अने तेने टेको आपवानो प्रयत्न अभिधम्मअट्ठकथाकारे अट्ठसालिनी नामनी धम्मसंगणिनी अट्ठकथाना आरंभमां कर्यो छे. वधी बाबतोनो विचार करता अभिधम्मपिटक, सुत्त अने विनय ए बे पिटक पछी लाबा काळे रचायेलो होवो जोइए ए स्पष्ट रीते जणाइ आवे छे. कथावत्थु प्रकरण तो मोग्गलिपुत्त तिस्से अशोक राजाना समयमां रच्युं एवो अट्ठकथामां स्पष्ट उल्लेख छे; अर्थात् पहेलां चार प्रकरण तेनी पहेलां केटलाक समये अने छेवटनां बे तेनी पछी केटलाक समये रचाया हशे.

धम्मसंगणि ए जेवो सर्वमां प्राचीन ग्रंथ छे तेवो ज ते महत्त्ववाळो पण छे. कारण के सर्व अभिधम्मनो पायो तेना उपर रचाएलो छे. एवो

सर्व पदार्थोना भिन्न भिन्न विभाग करी तेनो अर्थ विशद करवा प्रयत्न करेलो छे. उदाहरण तरीके पहेलां ज 'त्रिक' ल्यो. सर्व पदार्थोने 'कुसला धम्मा', 'अकुसला धम्मा' अने 'अव्याकता धम्मा' एवा त्रण विभाग पाडी पछी कुशल धर्म कया, अकुशल कया अने अव्याकृत कया एनो विस्तारथी विचार कर्यो छे. आ बाबतमां ज लगभग ग्रंथनो पोणो भाग रोकेलो छे. बीजा विभागोनो अर्थ संक्षेपमां कर्यो छे; कारण एवुं देखाय छे के—पहेला त्रिकनो अर्थ बराबर समजया पछी बाकीना विभागोने अर्थ ते प्रमाणे समजवो सुलभ पडशे एवो ग्रंथकर्तानो के—ग्रंथकर्ताओनो—उद्देश हशे.

अनिन्द्य होइ परिणाममां सुखकारक ते कुशल, निन्द्य होइ परिणाममां दुःखकारक ते अकुशल. आ सिवायना बाकी बधा अव्याकृत. बीजी रीते कहीए तो लोभमूलक, द्वेषमूलक अने मोहमूलक कर्मो अकुशल कहेवाय छे, अने अलोभमूलक, अद्वेषमूलक तथा अमोहमूलक कर्मो कुशल कहेवाय छे. अहिंआ अलोभ एटले केवळ लोभनो अभाव नथी, पण मनुष्य जातिने उपयोगी थवानी उत्कट इच्छा; अद्वेष एटले प्रेम अने अमोह एटले सात्त्विक ज्ञान एवो अर्थ समजवो जोइए.

अव्याकृत धर्मना रूप अने नाम एवा बे मुख्य भेद छे. रूप एटले बधी जडसृष्टि अने तेमाथी उत्पन्न थएली पांच ज्ञानेन्द्रियो. आ बधाने कुशल के अकुशल कही शकाय नहि. छतां आ चार महाभूतो अने तेमांथी उत्पन्न थएली जडसृष्टि कुशल अकुशलनुं मोटुं कारण थइ पडे छे.

अव्याकृत नामना (मनना) बे भेद छे, पहेलो विपाक अने बीजो क्रिया. विपाकमां नीचेनी बाबतोनो समावेश थाय छे. चक्षुविज्ञानआदि पंच विज्ञान, आ विज्ञानथी ते राग द्वेष मोह अथवा अराग, अद्वेष, अमोह

उत्पन्न थाय त्यां सुधीनो मनोव्यापार[2] अने पूर्वजन्मना कुशल अकुशल कर्मने लीधे प्राप्त थतुं प्रतिसन्धि[3] विज्ञान.

क्रिया बे प्रकारनी छे. एक सर्व साधारण प्राणीओनी क्रिया अने बीजी अर्हतनी क्रिया. तेमां पहेलाना त्रण भेद छे. 'पञ्चद्वारावज्जन', 'मनोद्वारावज्जन' अने 'वोट्टपन.' प्राणीओनी इन्द्रियो विषयोना संबंधमां आवे छे ते समये प्राणीनुं चित्त अमुक एक इन्द्रिय तरफ वळे छे. आ प्रवृत्तिने पञ्चद्वारावज्जन कहे छे, ज्यारे जे ते प्रवृत्तिने लीधे चित्त पांचमांथी कोई एक इन्द्रिय तरफ वळे छे जे विषयमां, स्मरणथी चित्त भूतकाळनी बाबतो तरफ वळे छे तेने मनोद्वारावज्जन कहे छे; अने जेना वडे इन्द्रियो द्वारा मळता रूप चित्त आगळ व्यवस्थित विषय तरीके स्पष्ट थाय छे तेने वोट्टपन कहे छे. वास्तविक रीते आ बंने—मनोद्वारावज्जन अने वोट्टपन—एकज जातनी क्रियाओ छे.

अर्हतनी क्रियामां तथा सामान्य लोकोना कुशलमां बहुज थोडो फरक छे. कुशल कर्मोनो विपाक होय छे. त्यारे क्रिया कर्मोनो विपाक होतो नथी. कुशल कर्म एटले सामाजिक मानमोह करेलुं सत्कर्म अने

---

२ आ मनोव्यापारनी कोई क्षण जे राग द्वेष आदिकमां लई जाय छे ते 'वोट्टपन' कहेवाय छे.

३ कुशल अथवा अकुशल कर्मना विपाकने लीधे व्यक्ति—अन्तःकरण पुनर्जन्मरूपे पेदा थाय छे. गर्भाशयमां प्रवेश करवानी प्रथम क्षणने अने देवादिमां उत्पत्तिनी प्रथम क्षणने 'पटिसन्धि' (प्रतिसन्धि) कहे छे. आ अन्तःकरण आखी जिंदगीमां सतानरूपे कायम रहे छे, अने तेना आधारे प्राणी नवां कुशल, अकुशल, अने क्रिया कर्मो करे छे. आ आखा भवमां व्यक्तिरूपे रहेनार अन्तःकरणने 'भवंग' (भवाङ्ग) कहे छे. अन्त्य क्षणमां आ अन्तःकरणने 'चुति' (च्युति=मरण) कहे छे.

क्रिया एटले जीवन्मुक्त अर्हन्तोए करेलुं सत्कर्म. कुशल कर्मोमांथी अकुशल संभवी शके छे परंतु क्रिया कर्मोमां अकुशलनुं मिश्रण कदी पण थइ शकतुं नथी.

आनो थोडोक खुलासो अस्थाने नहि गणाय. सांसारिक मनुष्य दान दे छे, शीलरक्षण, ध्यान, भावना वगेरे करे छे अने एनो आस्वाद ले छे. तेना परिणामे अभिमान, तृष्णा इत्यादि दुर्गुण उत्पन्न थवानो संभव छे एटले के दान शील वगेरे कुशल कर्मोमांथी अकुशल कर्मो उत्पन्न थइ शके छे. पण अर्हन्तनी स्थिति आवी नथी. ते जोके बीजा सामान्य जन प्रमाणे ज दान, शील, ध्यान, भावना वगेरे कर्मो आचरे तोपण तेनी सर्व वासनानो क्षय थयो होवाथी तेना अन्तःकरणमा अभिमान वगेरे दुर्गुणोनो आविर्भाव कदी पण थतो नथी.

सब्बपापस्स अकरणं कुसलस्स उपसंपदा ।
सचित्तपरियोदपनं एतं बुद्धान सासनं ॥

आ धम्मपदना श्लोकमां आज अर्थ चोक्खी रीते कहेलो छे. "लोभ-मूलक, द्वेषमूलक, अने मोहमूलक कोइ पण कर्म करवुं नहि. अलोभमूलक, अद्वेषमूलक अने अमोहमूलक सर्व पुण्य कर्मो सारी रीते करवां, अने पोतानुं चित्त आ शुभ कर्मोमा पण आसक्त न थवा देता शुद्ध राखवुं ए बुद्धोनुं शासन छे."

बुद्ध भगवाने कर्मने ज अत्यत प्राधान्य आप्युं छे. तेओ कहे छे के "कम्मस्सकोम्हि कम्मदायादो कम्मयोनि कम्मबन्धु कम्मपटिसरणो, यं कम्मं करिस्सामि कल्याण वा पापकं वा तस्स दायादो भविस्सामी ति पब्बजितेन अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बं ॥" (कर्म एज मारुं धन छे, कर्म एज मारो वारसो छे, कर्म एज मारो बन्धु छे, कर्ममांथीज मारी उत्पत्ति छे, कर्म एज मारुं शरण छे, ने पुण्य के पाप कर्म हुं करीश तेनो ज मने

वारसो मळशे एम प्रजनिते वारंवार विचार करवो जोइए.) अर्थात् अकुशल कर्मोनो त्याग करी कुशल कर्मो करवाथी ज मोक्ष मळे छे. एक प्रसंगे वैशालीमां सिंह सेनापतिए बुद्धने प्रश्न पुछ्यो के, "भदन्त, घणा लोको आपने अक्रियावादी कहे छे; तेओना कहेवा प्रमाणे आप खरेखरा अक्रियावादी छो?" बुद्धे जवाब आप्यो, 'सिंह! एक रीते मने अक्रियावादी कही शकाय. पापी विचारो क्रियामां मुकवा नहि, पापी विचारोनो नाश करवो, पापी विचारोने मनमां आवता पण नहि देवा, एवो हु उपदेश करुं छुं. आ दृष्टिथी जोइए, तो हुं अक्रियावादी खरो. पण जो बीजो कोइ मने क्रियावादी कहे तो तेनुं कहेवुं पण खोटुं कहेवाय नहि; कारणके पवित्र विचारोने क्रियामां मुकवा, कुशळ मनोवृत्तिने वधारवी, सदिच्छानुसार वर्तन करवु एवो हु उपदेश करु छुं. आ दृष्टिथी जोइए तो हु क्रियावादी छुं."[४]

बुद्धना आ कर्मयोगमां अने भगवद्गीताए प्रतिपादित करेला कर्मयोगमां घणो मोटो फरक छे. भगवद्गीतानुं एवुं कहेवुं छे के चातुर्वर्ण्य ईश्वरे उत्पन्न करेल होवाथी जे वर्णमां जन्म थयो होय ते वर्णने अनुसरीने कर्म करवुं जोइए; अने ते कर्ममां आसक्ति राख्या विना वर्तवुं जोइए. क्षत्रियोनो धर्म युद्ध करवानो छे; अने गुरु भाइभाडु साथे युद्ध करवानो प्रसंग आवे तो पण ते मोक्षमार्ग ज छे एम समजी निरपेक्षपणे युद्ध करवुं ते तेनु कर्तव्य छे; अने आम करवाथी ज तेने मुक्ति मळे. बौद्धोने आ वर्णव्यवस्था पसंद नथी. तेओनी कर्तव्यनी कसोटी राग, द्वेष अने मोहनो त्याग करी निरपेक्षता, प्रेम अने ज्ञानपूर्वक, धर्म मनन कर्या करवुं एमां छे. अर्थात् कोइ पण जातिनो माणस आ प्रमाणे वर्ते तो ते अर्हत् पद पामे.

वेदान्तीओनुं ध्येय जेम निर्गुण परब्रह्म छे तेम बौद्धोनुं ध्येय निर्वाण छे. निर्वाणने बौद्धो शून्य कहे छे अने ब्रह्मने वेदान्ती निर्गुण कहे छे.

---

४ जुओ बुद्धलीलासारसंग्रह पृ. २७९–८० मराठीआवृत्ति.

अर्थ एकज छे; शब्द मात्र जूदा छे. पण, निर्वाण तत्त्वमांथी निर्माण थयुं के जगत्मांथी निर्वाणतत्त्व नीकळ्युं आ वादमां बुद्ध नथी. बुद्ध कहे छे, 'पुरिमा भिक्खवे ! कोटि न पञ्ञायति अविज्ज 'भिक्षुओ, अविद्यानुं मूळ कारण कही शकाय तेम नथी.' संसार दु: छे अने निर्वाण शान्तिदायक छे, अने तेनो मार्ग कहीए तो ते सत्कर्म करवु एज छे. बुद्धनुं आटलुं ज कहेवुं छे.

निर्वाणतत्त्व अने तेना मार्गना विषयमां आपण अने बीजा प साथे थयेला वादविवाद महायान ग्रंथोमां पुष्कळ छे; तेवा ते स्थविरव पथना ग्रंथोमां नथी. अभिधर्मपिटकमां वादविवादात्मक ग्रंथ फ 'कथावत्थु' ज छे. परन्तु तेमां पण बीजा पंथो साथे वादविवाद बहुज थो छे. बौद्ध धर्मना प्रमेयो विशद करी बतावता मात्र ग्रंथकारे प्राच वादपद्धतिनो अंगीकार कर्यो छे एटलुं ज. आ उपरांत बौद्धोमां स्थवि वादथी भिन्न पंथो हता तेना मतोनु खंडन करवानो थोडो घणो प्र आ ग्रंथमां जणाय छे. बीजा बधा प्रकरणो मात्र भूत पदार्थोनी व्याख्य अने स्पष्टीकरणथी भरेला छे. धम्मसंगणि ग्रंथमां कुशल अकुशल आ भेद वर्णव्या छे ते उपर कह्यु ज छे. विभंगना अढार विभाग छे ते स्कंध, आयतन, धातु, आर्यसत्य, इन्द्रिय प्रतीत्यसमुत्पाद, इत्या वाबतोनी विस्तृत चर्चा छे. धातुकथामां धातु, आयतन, वगेरेनो स्क वगेरेमां केवी रीते संग्रह थाय छे तेनुं वर्णन छे. पुग्गलपञ्ञत्तिमां जगत् मळता भिन्न भिन्न स्वभावनी व्यक्तिओनुं वर्गीकरण कर्यु छे. यमक प्रश्नोत्तर अने तेना उत्तर छे. पट्ठानमां चोवीस प्रत्यय कहीने प्रत्ययो कुशल अकुशल अने अव्याकृत साथे केवो संबंध छे ए बताव्युं छे

आ सात ग्रंथोमां जे पदार्थोनो उहापोह कर्यो छे तेमांना प्रधानभू पदार्थोनो संग्रह अनुरुद्धाचार्ये अभिधम्मत्थसंगह ग्रन्थमां कर्यो छे अभिधर्ममां जे अने जेटले पदार्थो छे तेनो संग्रह एवो आ ग्रंथ

अनुरुद्धेन थेरेन अनुरुद्धयसस्सिना ।
तम्बरट्ठे वसन्तेन नगरे राजनामके ।
तत्थ संघविसिट्ठेन राजितेन अनाकुलं ।
महाविहारवासिनं वाचना-मग्गानिस्सित ॥
परमत्थं पकासेतुं परमत्थविनिच्छयं ।
पकरणं कतं तेन परमत्थत्थवेदिना ति ॥[१]

(श्रेष्ठ कावीरदेशमां कावीरनामना नगरमां, उत्तमकुळमां जन्म पामेला अनुरुद्ध[२] जेवा यशवाळा ते बहुश्रुत ज्ञानी अने परमार्थवस्तु जाणनारा अनुरुद्धस्थविरे ताम्रराष्ट्रमां राज नामना नगरमां विशिष्ट बौद्ध संघ साथे रहेता महाविहारवासी आचार्योनी परिशुद्ध परंपरानुं अवलंबन करीने परमार्थ प्रकाशित करवाना हेतुथी आ 'परमत्थविनिच्छय' नामनुं प्रकरण रच्युं.)

तेवी ज रीते सद्धम्मसंगह ग्रंथमां आ प्रकरण संबंधे उल्लेख छे. ते आ प्रमाणे

अनुरुद्धेन थेरेन कञ्चिपुरवरे वर ।
पकरण कतं तेन परमत्थविनिच्छयं ॥[१]

(श्रेष्ठ कांचीपुरमां अनुरुद्धस्थविरे परमत्थविनिच्छय नामनुं प्रकरण रच्युं.) उपरना श्लोकमां अने आ श्लोकमां बहु फरक छे. पहेलामां राजनगरमां रहेतां थकां आ प्रकरण रच्युं हतुं एवुं कह्युं छे; अने आमां कांचीपुरमां रच्युं एम कह्युं छे. पहेलामां कांचीवरने राष्ट्र कह्युं छे अने आमां 'पुर' कहयुं छे.

---

१ आ श्लोको देवमित्र महास्थविरनी सिंहली आवृत्तिमांथी लीधा छे. कारणके मूळ ग्रंथ मारी पासे नथी.

२ आ 'अनुरुद्ध' बुद्धनो एक शाक्यवंशीय प्रसिद्ध शिष्य हतो.

आनां वरतां वधारे गोटाळो टाल्ना पण्डितोए अभिधम्मत्थसंगहना अन्तिम श्लोकमां आवता 'तुमूलसोम' नामना विहार संबंधे कर्यो देखाय छे. देवमित्र स्थविरे इ.स. १८८८ नी सालमां पोते प्रकट करेला 'अभिधम्मत्थसंगह'नी प्रस्तावनामां 'तु' शब्द निराळो करी 'मूलसोम-विहार' संकाद्वीपमां हतो एवु कह्युं छे. परंतु तेनी विरुद्ध पुरावो सुमंगल नामना आचार्ये बारमा सैकामां रचेली विभावनी नामनी टीकामां मळी आवे छे तेमां 'तुमूलसोम नाम विहार' एवु स्पष्ट कह्युं छे. पण ते विहार क्यां हतो तेनो उल्लेख नथी. लेडीसाया (लेडीगामना आचार्य) नामना प्रसिद्ध आधुनिक ब्रह्मी पंडिते 'परमत्थदीपनी' नामनी अभिधम्मत्थसंगह उपर विस्तृत टीका लखी छे. आ टीकानो मुख्य हेतु विभावनी टीकाना दोषो बतववा ए हतो एम देखाइ आवे छे, छतां बीजी माहिती पण तेमां पुष्कळ मळे छे. परंतु लेडीसायाने आधुनिक ऐतिहासिक पद्धतिनी माहिती न होवाथी तुमूलसोम विहार क्यां हतो अने ते कोणे बांध्यो ए विषे जे माहीती आपी छे ते ऐतिहासिकदृष्टिए ग्राह्य लागती नथी.

तेओ कहे छे के—तुमूलसोमं ति एव नामकं विहार ॥ उत्तं हि खुद्दसिक्खाटीकाय—" सीहलदीपे तुमूलसोमविहारे सतुम्स पाकार ति नाम आण्ण विकिणित्वा करियति ॥ नहि तत्थ पण्णेन अत्थो अत्थि ॥ सब्बे पि इट्ठकाछन्ना पासादादयो " ति ॥ एसो किर विहारो आदितो अभय-गिरिरञ्जो अग्गमहेसीभूताय सोमदेविया कारापितत्ता यावज्जतना पि सोम-विहारो त्वेव पञ्ञायिथ ॥ तुमूलसद्दो पन विपुलसद्द परियायो .. सो च विहारो सट्ठिनवेहि महापरिवेणेहि सहितो होती ति अतिविय विपुलो महन्तो वित्थिण्णो होति । तस्मा सो विपुलत्ता महन्तत्ता वित्थिण्णत्ता तुमूलसोमो ति उच्चति ॥

(तुमूलसोम एटले आ नामनो विहार. खुद्दसिक्खा प्रकरणना टीकामां कह्यु छे के " सिंहलद्वीपमां तुमूलसोम विहारमां रहेता संघनु

भोजन ताडपत्रो वेची करवामा आवे छे; कारणके त्यां ताडपत्रनो उपयोग नथी; सघळा महेलो वगेरे नळीआथी ढांकेला. " आ विहार पहेलवहेलो अभयगिरि राजानी सोमदेवी नामनी पटराणीए कराव्यो; अने तेथी आजे पण ते एज नामथी प्रसिद्ध छे. तुमूलशब्द विपुलना अर्थमां छे..........ते विहारमा जुदी जुदी माइठ इमारतो होवाथी ते बहु विपुल, महान्, अने विस्तीर्ण छे ने विपुल, महान् अने विस्तीर्ण होवाथी तेने ' तुमूलसोम ' कहे छे.)

अभयगिरि नामनो राजा लंकाद्वीपमां थयानो महावंशमां क्यांइ पण उल्लेख मळतो नथी. तो पछी तेनी राणी सोमदेवी अने तेणे बांधेला तुमूलसोमविहारनी तो शी वात करवी! लेडीआचार्ये मुद्दसिक्खा टीकानो उल्लेख कर्यो छे. ते कइ टीका छे ते समजातुं नथी. सिंहलद्वीपमां ' सुमङ्गलप्पसादनी ' नामनी जे ' मुद्दसिक्खा 'नी टीका प्रसिद्ध छे तेमां आ उतारो मळतो नथी; अने ते तेमां होवानुं पण कारण लागतुं नथी. कारण ए छे के तेनो कर्ता सिंहलद्वीपनो रहेवासी होवाथी " सिंहलद्वीपे " लखे एम लागतुं नथी. अर्थात् आ टीका कोइ ब्रह्मी आचार्ये लखी हशे. ते ब्रह्मीभाषामा ज लखाइ होय तो तेमा नवाइ नथी. ने आचार्ये करेलुं ' तुमूलसोमविहार 'नुं वर्णन काल्पनिक ज हशे. लेडीआचार्ये तेने तुमूलशब्द उपर बतावेलुं पाण्डित्य पण आवाज प्रकारनुं छे. आवडो मोटो विहार जो सिंहलद्वीपमा होत तो तेनो महावंशमा के बीजा कोइ ग्रथमा कोइक ठेकाणे तो उल्लेख मळत; अने आजे तेना अवशेष कोइ पण जग्याए मळी आवत. पण सिंहलद्वीपमां तेनो जरा पण पत्तो नथी.

आ प्रमाणे अनुरुद्धाचार्यनी बाबतमा मळती माहीती अधूरी होइ केटलेक ठेकाणे परस्पर विरुद्ध छे; तो पण आ आचार्य काञ्चीपुर (हालनुं कांजीवरं) शहेरमा अथवा तेनी आजुबाजु इस्वीसनना ११मा सैकाना

अन्तमां अथवा बारमा सैकाना प्रारंभमा थया होवा जोइए एटलुं अनुमान करी शकाय छे. सिंहलद्वीपमां प्रख्यात पराक्रमबाहुनी कारकीर्दीनी शरुआत ई. स. ११६४नी सालमां थइ; अने ते पछी तेणे ३३ वर्ष एकछत्री राज्य कर्युं. पोतानी कारकीर्दीमा बौद्ध धर्मनी उन्नति माटे तेणे अनेक कामो कर्यां. तेणे पोतानी राजधानी पुलत्थिपुर (सिंहलीमां पोलोनरुवा) नी नजीक जेतवन नामनो मोटो विहार बंधावी तेमां सारिपुत्त नामना महास्थविर माटे निवासस्थान करी आप्युं, एवुं वर्णन महावंशमा मळे छे आ सारिपुत्त स्थविरे अनेक ग्रंथो लख्या छे. तेमां सिंहलीभाषामां लखेली अभिधम्मत्थसंगहनी टीका पण छे. तेना आधारे सुमंगलस्थविर नामना तेमना शिष्ये विभावनी टीका पालीभाषामां लखी. अर्थात् अनुरुद्धाचार्यनो समय सारिपुत्तस्थविर पहेला ओछामां ओछा पचास वर्ष पहेला होवो जोइए

इस्वीसनना अगीआरमा शतकना अन्तमा दक्षिण हिन्दुस्थानमा कावेरीनी आसुबाजु घणा ग्रंथकारो थइ गया. गंधवंशमां कह्युं छे के-- " बुद्धदत्ताचरियो, आनन्दाचरियो, धम्मपालाचरियो, द्वे पुब्बाचरिया, महावजिरबुद्धाचरियो, चुल्लवजिरबुद्धाचरियो, दीपंकराचरियो, चुल्लधम्मपालाचरियो, कस्सपाचरियो ति इमे दसाचरिया जम्बुदीपिका हेट्ठावुत्तप्पकारे गन्थे अकंसु. "

आमां 'पुब्बाचरिया' (पूर्वाचार्य) कोण हता ए समजातुं नथी बाकीना आचार्यो विषे पण अनुरुद्धाचार्य प्रमाणे तेमना ग्रंथो उपरांत वधारे माहीती मळती नथी. आनुं कारण एवुं हशे के आ आचार्यो पछी थोडा समये अत्यन्त असहिष्णु शैवधर्मनो प्रचार दक्षिण हिन्दुस्थानमां थयो. तामिलभाषामा हलमाहात्म्य नामनुं एक पुस्तक छे, अने तेमां हल नामना शैव संन्यासीए बौद्धो अने जैनोनो केवी रीते नाश कर्यो तेनुं विस्तृत वर्णन छे. एवुं मारा साभळवामा आव्युं छे. आवी स्थितिमां कावेरीनी आसु बाजु बंधावेला बौद्धविहारनुं नाम पण नथी एमां शुं

आश्चर्य छे! मारा विचार प्रमाणे तुमूलसोमविहार पण आज प्रदेशानां हतो; अने जे 'नंद' नामना गृहस्थे 'अभिधम्मत्थसंगह' लखवानी अनुरुद्धाचार्यने प्रार्थना करेली ते पण तामिल जातिनो हतो. आ सर्व आचार्योना ग्रंथो सिंहलद्वीपमां पहोंची गया होवाथी आजे हयात छे; नहिं तो तेओना विहारोनी जे गति थइ ते तेओना ग्रंथोनी पण थात ते कहेवानी जरुर नथी.

आ ग्रंथनुं संशोधन करवा माटे मारी पासे जुदा जुदा पुस्तकोनो आधार करेलुं छे. तेमांनु पहेलुं हेविथन्तुद्दवे देवमित्रस्थविरे बुद्ध संवत् '२४३२' अथवा इस्वीसन १८८८ना सालमां सिंहलीलिपिमां कोलंबोमां प्रसिद्ध करेलुं छे. तेना पाठभेदो 'सी' अक्षरथी बताव्या छे. बीजुं विभावनी टीका साथे ब्रह्मी शक १२९८नी सालमा कविनेन्द्रामे रंगुनमां प्रसिद्ध करेलु पुस्तक छे. आमांना पाठभेद 'म' अक्षरथी बताव्या छे. त्रीजुं पाली टेक्स्ट सोसायटीए १८८४नी सालमां पोताना जर्नलमा रोमनलिपिमा प्रसिद्ध कर्युं छे. आनुं संशोधन जोके पालिभाषाना प्रसिद्ध विद्वान् प्रो. र्‍हीस डेवीडसे कर्युं छे छतां ते बराबर शुद्ध न होवाथी तेना पाठभेद नोंध्या नथी. 'आरम्मण' शब्द सिंहली आवृत्तिमां 'आलम्बन' रूपे अने ब्रह्मी आवृत्तिमां 'आलम्बण' रूपे मळे छे. परंतु मूळ 'धम्मसंगणि' वगेरे ग्रंथोमां 'आरम्मण' शब्द ज आवतो होवाथी अने दरेक जगाए एज रूप रहे एवा हेतुथी तेज रूपनो स्वीकार कर्यो छे. 'वोट्ठपन' शब्द सिंहली आवृत्तिमा 'वोत्थपन' अने ब्रह्मी आवृत्तिमा 'वोट्ठब्बन' अने पालिटेक्स्टसोसायटीनी आवृत्तिमा 'वोत्थप्पन' रूपे मळे छे. आ उपरांत बीजा नहि जेवा फेरफारो जुदी जुदी आवृत्तिओमा छे. परंतु विभावनी टीका अने लेडी आचार्यनी परमत्थदीपनी टीकाना आधारे बराबर विचार करी जे पाठ योग्य लाग्या तेज स्वीकार्या छे. विस्तारना भयथी घणा पाठोनो निर्देश कर्यो नथी. पण ज्यां बन्ने पाठ स्वीकारवाथी अर्थ बन

केटली ठाई एम हैव त्यां पछीथी योग्य पा० मूळमां मूकी दीधो पाठ टीपमां आपेलो छे.

दुर्बोधताने कारणे पारिभाषिक 'अनुमति' रहे छे. हिन्दी अने मराठी व्याकरणना ग्रंथोमां हालना पुस्तको प्रमाणे पारिभाषिक शब्दोनी पद्धति नथी. तथापि अनुक्रम पिछाण भिन्न छे, पण तेनो उपयोग दरेक ठेकाणे योग्य रीते थई शकतो नथी. व्याकरणमां वैदिक भेद होवाथी असर मात्र उच्चारनो भेद ज होय तो हिन्दी मराठीमां (व्याकरण लेखक) अनुसरीने भिन्न वर्गो करवा आवे छे. आवी घणी बाबतोमां पारिभाषिक शब्दनुं काम दरेक आधुनिक भाषाओने माथे रहे छे देशविदेशनी [illegible] भिन्न आवृत्तिमां पारिभाषिक छे पण ओळखाणथी तेनो निर्देश करेलो नथी. मराठी अने [illegible] ग्रंथो साथे इतरनी आवृत्तिओमां पारिभाषिकनी पद्धति ओळखाय एम छे. परन्तु आ बधी आवृत्तिओमां पेटाभागनी पद्धति जुदी जुदी छे. आ ठेकाणे पण पद्धतिओ स्वीकार न करतां मैं स्वतंत्र रीते पारिभाषिक शब्दो छे, जेने ज बराबर वधी समजावेली मारी छे. अनुक्रमणिकानुं काम रहेलुं बाद करीने पेटाभाग पछी आंकडा मुकेला छे. फोर्म छपाया पछी कंई कोई ठेकाणे अनुस्वार, मात्रा, काना वगेरे ऊडी गयेला देखाया पण टीका करवा जेवुं नहि होय एम धारी तेनुं जुदुं शुद्धिपत्रक आप्युं नथी. पुस्तक वापरनार ध्यानमां आवे भूलो सुधारी लेवा ज आवी विनंती करवामां आवी छे.

आ पुस्तक गूजरात विद्यापीठ स्थापित पुरातत्त्वमंदिर मारफत तैयार थवानुं होवाथी तेनी प्रस्तावना गूजराती भाषामां ज लखवी योग्य गणाय. पण तेनुं मने पूरतुं ज्ञान नथी. गूजरात पुरातत्त्व मंदिरना मन्त्री श्री. रसिकलाल छोटालाल परीखनी गूजराती अनुवाद करवाना काममां मदद न मळी होत तो तेम करवुं अशक्य थात. आ मदद माटे तेमना

आभारी छुं. बीजा प्रांतना वाचको तेनो थोडो घणो उपयोग करी शके ए हेतुथी प्रस्तावना नागरी लीपीमां छापी छे.

गूजरात पुरातत्त्व मंदिर,
फाल्गुन वद ४ सं. १९७९ } धर्मानंद कोसम्बी.



अभिधम्मत्थसंगहो

१.

(चित्तसंगहविभागो.)

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स ।

१. सम्मासंबुद्धमतुलं ससद्धम्मगणुत्तमं ।
अभिवादिय भासिस्सं अभिधम्मत्थसंगहं ॥
तत्थ वुत्ताभिधम्मत्था चतुधा परमत्थतो ।
चित्तं चेतसिकं रूपं निब्बानमिति सब्बथा ॥

२. तत्थ चित्तं ताव चतुब्बिधं होति, कामावचरं, रूपावचरं, अरूपावचरं, लोकुत्तरं चेति ॥

३. तत्थ कतमं कामावचरं ? सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतसंपयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतसंपयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं । उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं ति इमानि अट्ठ पि लोभसहगतानि चित्तानि नाम ॥

४. दोमनस्ससहगतं पटिघसंपयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं ति इमानि द्वे पि पटिघचित्तानि नाम ॥

५. उपेक्खासहगतं विचिकिच्छासंपयुत्तमेकं, उपेक्खासहगतं उद्धच्चसंपयुत्तमेकं ति इमानि द्वे पि मोमूहचित्तानि नाम ॥

इच्चेवं सब्बथा पि द्वादसाकुसलचित्तानि समत्तानि ॥

६. अट्ठधा लोभमूलानि दोसमूलानि च द्विधा।
मोहमूलानि च द्वे ति द्वादसाकुसला सियुं॥

७. उपेक्खासहगतं चक्खुविञ्ञाणं। तथा सोतविञ्ञाणं, घानवि-ञ्ञाणं, जिव्हाविञ्ञाणं। दुक्खसहगतं कायविञ्ञाणं। उपेक्खासहगतं सम्पटिच्छनचित्तं। उपेक्खासहगतं सन्तीरणचित्तं चेति इमानि सत्त पि अकुसलविपाकचित्तानि नाम॥

८. उपेक्खासहगतं चक्खुविञ्ञाणं। तथा सोतविञ्ञाणं, घानवि-ञ्ञाणं, जिव्हाविञ्ञाणं। सुखसहगतं कायविञ्ञाणं। उपेक्खासहगतं सम्पटिच्छनचित्तं। सोमनस्ससहगतं सन्तीरणचित्तं। उपेक्खासहगतं सन्तीरणचित्तं चेति इमानि अट्ठ पि कुसलविपाकाहेतुकचित्तानि नाम॥

९. उपेक्खासहगतं पञ्चद्वारावज्जनचित्तं। तथा मनोद्वारावज्जनचित्तं। सोमनस्ससहगतं हसितुप्पादचित्तं चेति इमानि तीणि पि अहेतुककिरियाचित्तानि नाम॥

इच्चेवं सब्बथा पि अट्ठारसाहेतुकचित्तानि समत्तानि॥

१०. सत्ताकुसलपाकानि पुञ्ञपाकानि अट्ठधा।
क्रियाचित्तानि तीणी ति अट्ठारस अहेतुका॥

११. पापाहेतुकमुत्तानि सोभनानी ति वुच्चरे।
एकूनसट्ठि चित्तानि अथेकनवुती पि वा॥

१२. सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं। सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं। उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं। उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं असंखारिकमेकं ससंखारिकमेकं ति इमानि अट्ठ पि कामावचरकुसलचित्तानि नाम॥

१३. सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं। सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिक-

मेकं। उपेक्खासहगतं ञाणसंपयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं। उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं ति इमानि अट्ठ पि सहेतुककामावचरविपाकचित्तानि नाम ॥

१४. सोमनस्ससहगतं ञाणसंपयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं। सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं। उपेक्खासहगतं ञाणसंपयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं। उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं असंखारिकमेकं, ससंखारिकमेकं ति इमानि अट्ठ पि सहेतुककामावचरक्रियाचित्तानि नाम ॥

इच्चेवं सब्बथा पि चतुवीसति सहेतुककामावचरकुसलविपाकक्रियाचित्तानि समत्तानि ॥

१५. वेदनाञाणसंखारभेदेन चतुवीसति ।
सहेतुकामावचरपुञ्ञपाकक्रिया मता ॥

१६. कामे तेवीस पाकानि पुञ्ञापुञ्ञानि वीसति ।
एकादस क्रिया चेति चतुपञ्ञास सब्बथा ॥

१७. वितक्कविचारपीतिसुखेकग्गतासहितं पठमज्झानकुसलचित्तं। विचारपीतिसुखेकग्गतासहितं दुतियज्झानकुसलचित्तं। पीतिसुखेकग्गतासहितं ततियज्झानकुसलचित्तं। सुखेकग्गतासहितं चतुत्थज्झानकुसलचित्तं। उपेक्खेकग्गतासहितं पञ्चमज्झानकुसलचित्तं चेति इमानि पञ्च पि रूपावचरकुसलचित्तानि नाम ॥

१८. वितक्कविचारपीतिसुखेकग्गतासहितं पठमज्झानविपाकचित्तं। विचारपीतिसुखेकग्गतासहितं दुतियज्झानविपाकचित्तं। पीतिसुखेकग्गतासहितं ततियज्झानविपाकचित्तं। सुखेकग्गतासहितं चतुत्थज्झानविपाकचित्तं। उपेक्खेकग्गतासहितं पञ्चमज्झानविपाकचित्तं चेति इमानि पञ्च पि रूपावचरविपाकचित्तानि नाम ॥

१९. वितक्कविचारपीतिसुखेकग्गतासहितं पठमज्झानक्रियाचित्तं।

विचारपीतिसुखेकग्गतासहितं दुतियज्झानक्रियाचित्तं । पीतिसुखेकग्गतासहितं ततियज्झानक्रियाचित्तं । सुखेकग्गतासहितं चतुत्थज्झानक्रियाचित्तं । उपेक्खेकग्गतासहितं पञ्चमज्झानक्रियाचित्तं चेति इमानि पञ्च पि रूपावचरक्रियाचित्तानि नाम ॥

इच्चेवं सब्बथा पि पन्नरस रूपावचरकुसलविपाकक्रियाचित्तानि समत्तानि ॥

२०. पञ्चधा झानभेदेन रूपावचरमानसं ।
पुञ्ञपाकक्रियाभेदा तं पञ्चदसधा भवे ॥

२१. आकासानञ्चायतनकुसलचित्तं । विञ्ञाणञ्चायतनकुसलचित्तं । आकिञ्चञ्ञायतनकुसलचित्तं । नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकुसलचित्तं चेति इमानि चत्तारि पि अरूपावचरकुसलचित्तानि नाम ॥

२२. आकासानञ्चायतनविपाकचित्तं । विञ्ञाणञ्चायतनविपाकचित्तं आकिञ्चञ्ञायतनविपाकचित्तं । नेवसञ्ञानासञ्ञायतनविपाकचित्तं चेति इमानि चत्तारि पि अरूपावचरविपाकचित्तानि नाम ॥

२३. आकासानञ्चायतनक्रियाचित्तं । विञ्ञाणञ्चायतनक्रियाचित्तं । आकिञ्चञ्ञायतनक्रियाचित्तं । नेवसञ्ञानासञ्ञायतनक्रियाचित्तं चेति इमानि चत्तारि पि अरूपावचरक्रियाचित्तानि नाम ॥

इच्चेवं सब्बथा पि द्वादस अरूपावचरकुसलविपाकक्रियाचित्तानि समत्तानि ॥

२४. आलम्बनप्पभेदेन चतुधारुप्पमानसं ।
पुञ्ञपाकक्रियाभेदा पुन द्वादसधा ठितं ॥

२५. सोतापत्तिमग्गचित्तं । सकदागामिमग्गचित्तं । अनागामिमग्गचित्तं । अरहत्तमग्गचित्तं चेति इमानि चत्तारि पि लोकुत्तरकुसलचित्तानि नाम ॥

२६. सोतापत्तिफलचित्तं । सकदागामिफलचित्तं । अनागामिफलचित्तं । अरहत्तफलचित्तं चेति इमानि चत्तारि पि लोकुत्तरविपाकचित्तानि नाम ॥

इच्चेवं सब्बथा पि अट्ठ लोकुत्तरकुसलविपाकचित्तानि समत्तानि ॥

२७. चतुमग्गप्पभेदेन चतुधा कुसलं तथा ।
पाकं तस्स फलत्ता ति अट्ठधानुत्तरं मतं ॥

२८. द्वादसाकुसलानेवं कुसलानेकवीसति ।
छत्तिंसेव विपाकानि क्रियाचित्तानि वीसति ॥

२९. चतुपञ्ञासधा कामे रूपे पन्नरसीरये ।
चित्तानि द्वादसारुप्पे अट्ठधानुत्तरे तथा ॥
इत्थमेकूननवुतिप्पभेदं पन मानसं ।
एकवीससतं वाथ विभजन्ति विचक्खणा ॥

३०. कथं एकूननवुतिविधं चित्तं एकवीससतं होति ? वितक्कविचारपीतिसुखेकग्गतासहितं पठमज्झानसोतापत्तिमग्गचित्तं । विचार पीतिसुखेकग्गतासहितं दुतियज्झानसोतापत्तिमग्गचित्तं । पीतिसुखेकग्गतासहितं ततियज्झानसोतापत्तिमग्गचित्तं । सुखेकग्गतासहितं चतुत्थज्झानसोतापत्तिमग्गचित्तं । उपेक्खेकग्गतासहितं पञ्चमज्झानसोतापत्तिमग्गचित्तं चेति इमानि पञ्च पि सोतापत्तिमग्गचित्तानि नाम ॥ तथा सकदागामिमग्ग-अनागामिमग्ग-अरहत्तमग्गचित्तं चेति समवीसति मग्गचित्तानि । तथा फलचित्तानि चेति समचत्तालीस लोकुत्तरचित्तानि भवन्ती ति ॥

३१. झानङ्गयोगभेदेन कत्वेकेकं तु पञ्चधा ।
वुच्चतानुत्तरं चित्तं चत्तालीस विधं ति च ॥
यथा च रूपावचरं गय्हतानुत्तरं तथा ।
पठमादिज्झानभेदे आरुप्पं चापि पञ्चमे ॥

एकादसविधं तस्मा पठमादिकमीरितं ।
झानमेकेकमन्ते तु तेवीसतिविधं भवे ॥
सत्ततिंसविधं पुञ्ञं द्विपञ्ञासविधं तथा ।
पाकमिच्चाहु चित्तानि एकवीससतं बुधा ॥

इति अभिधम्मत्थसंगहे चित्तसंगहविभागो नाम पठमो परिच्छेदो ॥

२

(चेतसिकसंगहविभागो.)

१. एकुप्पादनिरोधा च एकालम्बनवत्थुका ।
चेतोयुत्ता द्विपञ्ञास धम्मा चेतसिका मता ॥

२. कथं ? फस्सो, वेदना, सञ्ञा, चेतना, एकग्गता, जीवितिन्द्रियं, मनसिकारो चेति सत्तिमे चेतसिका सब्बचित्तसाधारणा नाम ॥

३. वितक्को, विचारो, अधिमोक्खो, विरियं, पीति, छन्दो चाति छ इमे चेतसिका पकिण्णका नाम ॥ एवमेते तेरस चेतसिका अञ्ञसमाना ति वेदितब्बा ॥

४. मोहो, अहिरिकं, अनोत्तप्पं, उद्धच्चं, लोभो, दिट्ठि, मानो, दोसो, इस्सा, मच्छरियं, कुक्कुच्चं, थीनं, मिद्धं, विचिकिच्छा चेति चुद्दसिमे चेतसिका अकुसला नाम ॥

५. सद्धा, सति, हिरि, ओत्तप्पं, अलोभो, अदोसो, तत्रमज्झत्तता, कायपस्सद्धि, चित्तपस्सद्धि, कायलहुता, चित्तलहुता, कायमुदुता, चित्तमुदुता, कायकम्मञ्ञता, चित्तकम्मञ्ञता, कायपागुञ्ञता, चित्तपागुञ्ञता, कायुजुकता, चित्तुजुकता, चेति एकूनवीसतिमे चेतसिका सोभनसाधारणा नाम ॥

६. सम्मावाचा, सम्माकम्मन्तो, सम्माआजीवो चेति तिस्सो विरतियो नाम ॥

७. करुणा-मुदिता पन अप्पमञ्ञायो नामा ति सब्बथा पि पञ्ञिन्द्रियेन सद्धिं पञ्चवीसतिमे चेतसिका सोभना ति वेदितब्बा ॥

८. एत्तावता च–

तेरसञ्ञसमाना च चुद्दसाकुसला तथा ।
सोभना पञ्चवीसा ति द्विपञ्ञास पवुच्चरे ॥

९. तेसं चित्ताविपुत्तानं यथायोगमितो परं ।
चित्तुप्पादेसु पच्चेकं संपयोगो पवुच्चति ॥
सत्त सब्बत्थ युज्जन्ति यथायोगं पकिण्णका ।
चुद्दसाकुसलेस्वेव सोभनेस्वेव सोभना ॥

१०. कथं? सब्बचित्तसाधारणा ताव सत्त चेतसिका सब्बेसु पि एकूननवुतिचित्तुप्पादेसु लब्भन्ति ॥

११. पकिण्णकेसु पन वितक्को ताव द्विपञ्चविञ्ञाणवज्जितकामावचरचित्तेसु चेव एकादससु पठमज्झान चित्तेसु चेति पञ्चपञ्ञासचित्तेसु उप्पज्जति ॥ विचारो पन तेसु चेव एकादससु दुतियज्झानचित्तेसु चेति छसट्ठिचित्तेसु जायति ॥ अधिमोक्खो द्विपञ्चविञ्ञाणविचिकिच्छावज्जितचित्तेसु ॥ विरियं पञ्चद्वारावज्जन-द्विपञ्चविञ्ञाण-संपटिच्छन-संतीरणवज्जितचित्तेसु ॥ पीति दोमनस्सुपेक्खासहगत-कायविञ्ञाण-चतुत्थज्झानवज्जितचित्तेसु ॥ छन्दो अहेतुक-मोमूहवज्जितचित्तेसु लब्भति ॥

१२. ते पन चित्तुप्पादा यथाक्कमं–

छसट्ठि पञ्चपञ्ञास एकादस च सोळस ।
सत्तति वीसति चेव पकिण्णकविवज्जिता ॥

पञ्चपञ्ञास छसट्ठिट्ठसत्ततिं तिसत्तति ।
एकपञ्ञास चेकूनसत्तति सपकिण्णका ॥

१३. अकुसलेसु पन मोहो, अहिरिकं, अनोत्तप्पं, उद्धच्चं चेति चत्तारोमे चेतसिका सब्बाकुसलसाधारणा नाम । सब्बेसु पि द्वादसाकुसलेसु लब्भन्ति ॥ लोभो अट्ठसु लोभसहगतचित्तेस्वेव लब्भति ॥ दिट्ठि चतूसु दिट्ठिगतसंपयुत्तेसु ॥ मानो चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तेसु ॥ दोसो, इस्सा, मच्छरियं, कुक्कुच्चं च द्वीसु पटिघचित्तेसु ॥ थीनं, मिद्धं पञ्चसु ससंखारिकचित्तेसु ॥ विचिकिच्छा विचिकिच्छासहगतचित्ते येव लब्भती ति ॥

१४. सब्बापुञ्ञेसु चत्तारो लोभमूले तयो गता ।
दोसमूलेसु चत्तारो ससंखारे द्वयं तथा ॥
विचिकिच्छा विचिकिच्छाचित्ते चेति चुद्दस ।
द्वादसाकुसलेस्वेव संपयुज्जन्ति पञ्चधा ॥

१५. सोभनेसु पन सोभनसाधारणा ताव एकूनवीसति चेतसिका सब्बेसु पि एकूनसट्ठिसोभनचित्तेसु संविज्जन्ति ॥ विरतियो पन तिस्सो पि लोकुत्तरचित्तेसु सब्बथा पि नियता एकतो व लब्भन्ति । लोकियेसु पन कामावचरकुसलेस्वेव कदाचि संदिस्सन्ति विसुं विसुं ॥ अप्पमञ्ञायो पन द्वादससु पञ्चमज्झानवज्जितमहग्गतचित्तेसु चेव कामावचरकुसलेसु च सहेतुककामावचरकिरियाचित्तेसु चेति अट्ठवीसतिचित्तेस्वेव कदाचि नाना हुत्वा जायन्ति ॥ उपेक्खासहगतेसु पनेत्थ करुणामुदिता न सन्ती ति केचि वदन्ति ॥ पञ्ञा पन द्वादससु ञाणसंपयुत्तकामावचरचित्तेसु चेव सब्बेसु पञ्चतिंसमहग्गतलोकुत्तरचित्तेसु चेति सत्तचत्तालीसचित्तेसु संपयोगं गच्छती ति ॥

१६. एकूनवीसति धम्मा जायन्तेकूनसट्ठिसु ।
तयो सोळसचित्तेसु अट्ठवीसतियं द्वयं ॥

पञ्ञा पकासिता सत्तवीसतिविधेसु पि ।
संपयुत्ता चतुद्देवं सोभनेस्वेव सोभना ॥

१७. इस्सा-मच्छेर-कुक्कुच-विरती-करुणादयो ।
नाना कदाचि मानो च थीनमिद्धं तथा सह ॥
यथावुत्तानुसारेन सेसा नियतयोगिनो ।
संगहं च पवक्खामि तेसं दानि यथारहं ॥

१८. छत्तिंसानुत्तरे धम्मा पञ्चतिंस महग्गते ।
अट्ठतिंसापि लब्भन्ति कामावचरसोभने ॥
सत्तवीसत्यपुञ्ञम्हि द्वादसाहेतुके ति च ।
यथासंभवयोगेन पञ्चधा तत्थ संगहो ॥

१९. कथं ! लोकुत्तरेसु ताव अट्ठसु पठमज्झानिकचित्तेसु अञ्ञसमाना तेरस चेतसिका, अप्पमञ्ञावज्जिता तेवीसति सोभनचेतसिका चेति छत्तिंस धम्मा संगहं गच्छन्ति ॥ तथा दुतियज्झानिकचित्तेसु वितक्कवज्जा ॥ ततियज्झानिकचित्तेसु वितक्कविचारवज्जा ॥ चतुत्थज्झानिकचित्तेसु वितक्कविचारपीतिवज्जा ॥ पञ्चमज्झानिकचित्तेसु उपेक्खासहगता ते एव संगय्हन्ती ति सब्बथा पि अट्ठसु लोकुत्तरचित्तेसु पञ्चकज्झानवसेन पञ्चधा व संगहो होती ति ॥

२०. छत्तिंस पञ्चतिंसाथ चतुत्तिंस यथाक्कमं ।
तेत्तिंस द्वयमिच्चेवं पञ्चधानुत्तरे ठिता ॥

२१. महग्गतेसु पन तीसु पठमज्झानिकचित्तेसु ताव अञ्ञसमाना तेरस चेतसिका विरतित्तयवज्जिता द्वावीसति सोभनचेतसिका चेति पञ्चतिंस धम्मा संगहं गच्छन्ति ॥ करुणामुदिता पनेत्थ पच्चेकमेव योजेतब्बा ॥ तथा दुतियज्झानिकचित्तेसु वितक्कवज्जा । ततियज्झानिकचित्तेसु वितक्कविचारवज्जा । चतुत्थज्झानिकचित्तेसु वितक्कविचारपीतिवज्जा ॥ पञ्चमज्झानिकचित्तेसु पन पन्नरससु अप्पमञ्ञायो

पञ्चपञ्ञास छसट्ठिसत्तति तिसत्तति ।
एकपञ्ञास चेकूनसत्तति सपकिण्णका ॥

१३. अकुसलेसु पन मोहो, अहिरिकं, अनोत्तप्पं, उद्धच्चं चे
चत्तारोमे चेतसिका सब्बाकुसलसाधारणा नाम । सब्बेसु पि द्वा
साकुसलेसु लब्भन्ति ॥ लोभो अट्ठसु लोभसहगतचित्तेस्वेव लब्भति
दिट्ठि चतूसु दिट्ठिगतसंपयुत्तेसु ॥ मानो चतूसु दिट्ठिगतविप्प
त्तेसु ॥ दोसो, इस्सा, मच्छरियं, कुक्कुच्चं च द्वीसु पटिघचित्तेसु
थीनं, मिद्धं पञ्चसु ससंखारिकचित्तेसु ॥ विचिकिच्छा विचिकिच्छ
सहगतचित्ते येव लब्भती ति ॥

१४. सब्बापुञ्ञेसु चत्तारो लोभमूले तयो गता ।
दोसमूलेसु चत्तारो ससंखारे द्वयं तथा ॥
विचिकिच्छा विचिकिच्छाचित्ते चेति चुद्दस ।
द्वादसाकुसलेस्वेव संपयुज्जन्ति पञ्चधा ॥

१५. सोभनेसु पन सोभनसाधारणा ताव एकूनवीसति चेतसि
सब्बेसु पि एकूनसट्ठिसोभनचित्तेसु संविज्जन्ति ॥ विरतियो प
तिस्सो पि लोकुत्तरचित्तेसु सब्बथा पि नियता एकतो व लब्भन्ति
लोकियेसु पन कामावचरकुसलेस्वेव कदाचि संदिस्सन्ति विसुं विसुं
अप्पमञ्ञायो पन द्वादससु पञ्चमज्झानवज्जितमहग्गतचित्तेसु चे
कामावचरकुसलेसु च सहेतुककामावचरकियाचित्तेसु चेति अट्ठवीसति
चित्तेस्वेव कदाचि नाना हुत्वा जायन्ति ॥ उपेक्खासहगतेसु पनेत
करुणामुदिता न सन्ती ति केचि वदन्ति ॥ पञ्ञा पन द्वादस
ञाणसंपयुत्तकामावचरचित्तेसु चेव सब्बेसु पञ्चतिंसमहग्गतलोकुत्तर
चित्तेसु चेति सत्तचत्तालीसचित्तेसु संपयोगं गच्छती ति ॥

१६. एकूनवीसति धम्मा जायन्तेकूनसट्ठिसु ।
तयो सोळसचित्तेसु अट्ठवीसतियं द्वयं ॥

पञ्ञा पञ्चासिता मग्गचत्तालीसविधेसु पि ।
संपयुत्ता चतुद्धेवं सोभनेस्वेव सोभना ॥

१७. इस्सा-मच्छेर-कुक्कुच-विरती-करुणादयो ।
नाना कदाचि मानो च थीनमिद्धं तथा सह ॥
यथावुत्तानुसारेन सेसा नियतयोगिनो ।
संगहं च पवक्खामि तेसं दानि यथारहं ॥

१८. छत्तिंसानुत्तरे धम्मा पञ्चतिंस महग्गते ।
अट्ठतिंसापि लब्भन्ति कामावचरसोभने ॥
सत्तवीसत्यपुञ्ञम्हि द्वादसाहेतुके ति च ।
यथासंभवयोगेन पञ्चधा तत्थ संगहो ॥

१९. कथं ? लोकुत्तरेसु ताव अट्ठसु पठमज्झानिकचित्तेसु अञ्ञसमाना तेरस चेतसिका, अप्पमञ्ञावज्जिता तेवीसति सोभनचेतसिका चेति छत्तिंस धम्मा संगहं गच्छन्ति ॥ तथा दुतियज्झानिकचित्तेसु वितक्कवज्जा ॥ ततियज्झानिकचित्तेसु वितक्कविचारवज्जा ॥ चतुत्थज्झानिकचित्तेसु वितक्कविचारपीतिवज्जा ॥ पञ्चमज्झानिकचित्तेसु उपेक्खासहगता ते एव संगय्हन्ती ति सब्बथा पि अट्ठसु लोकुत्तरचित्तेसु पञ्चकज्झानवसेन पञ्चधा व संगहो होती ति ॥

२०. छत्तिंस पञ्चतिंसाथ चतुत्तिंस यथाक्कमं ।
तेत्तिंस द्वयमिच्चेवं पञ्चधानुत्तरे ठिता ॥

२१. महग्गतेसु पन तीसु पठमज्झानिकचित्तेसु ताव अञ्ञसमाना तेरस चेतसिका विरतित्तयवज्जिता द्वावीसति सोभनचेतसिका चेति पञ्चतिंस धम्मा संगहं गच्छन्ति ॥ करुणामुदिता पनेत्थ पच्चेकमेव योजेतब्बा ॥ तथा दुतियज्झानिकचित्तेसु वितक्कवज्जा । ततियज्झानिकचित्तेसु वितक्कविचारवज्जा । चतुत्थज्झानिकचित्तेसु वितक्कविचारपीतिवज्जा ॥ पञ्चमज्झानिकचित्तेसु पन पन्नरससु अप्पमञ्ञायो

न लब्भन्ती ति सब्बथा पि सत्तवीसतिमहग्गतचित्तेसु पञ्चकज्झान-वसेन पञ्चधा व संगहो होती ति ॥

२२. पञ्चतिंस चतुत्तिंस तेत्तिंस च यथाक्कमं ।
बत्तिंस चेव तिंसेति पञ्चधा व महग्गते ॥

२३. कामावचरसोभनेसु पन कुसलेसु ताव पठमद्वये अञ्ञसमाना तेरस चेतसिका, पञ्चवीसति सोभनचेतसिका चेति अट्ठतिंस धम्मा संगहं गच्छन्ति ॥ अप्पमञ्ञाविरतियो पनेत्थ पञ्च पि पच्चेकमेव योजेतब्बा ॥ तथा दुतियद्वये ञाणवज्जिता । ततियद्वये ञाणसम्पयुत्ता पीतिवज्जिता । चतुत्थद्वये ञाणपीतिवज्जिता ते एव संगय्हन्ति ॥ क्रियाचित्तेसु पि विरतिवज्जिता तथेव चतुसु पि दुकेसु चतुधा व संगय्हन्ति ॥ तथा विपाकेसु च अप्पमञ्ञाविरतिवज्जिता ते एव संगय्हन्ती ति सब्बथा पि चतुवीसतिकामावचरसोभनचित्तेसु दुकवसेन द्वादसधा व संगहो होती ति ॥

२४. अट्ठतिंस सत्ततिंस द्वयं छत्तिंसकं सुभे ।
पञ्चतिंस चतुत्तिंस द्वयं तेत्तिंसकं क्रिये ॥
तेत्तिंस पाके बत्तिंस द्वयेकतिंसकं भवे ।
सहेतुकामावचरपुञ्ञपाकक्रियामने ॥
न विज्जन्तेत्थ विरती क्रियासु च महग्गते ।
अनुत्तरे अप्पमञ्ञा कामपाके द्वयं तथा ॥
अनुत्तरे झानधम्मा अप्पमञ्ञा च मज्झिमे ।
विरती ञाणपीती च परित्तेसु विसेसका ॥

२५. अकुसलेसु पन लोभमूलेसु ताव पठमे असंखारिके अञ्ञसमाना तेरस चेतसिका, अकुसलसाधारणा चत्तारो चा ति सत्तरस लोभदिट्ठीहि सद्धिं एकूनवीसति धम्मा संगहं गच्छन्ति ॥ तथेव

दुतिये असंखारिके लोभमानेन । ततिये तथेव पीतिवज्जिता लोभ-दिट्ठीहि सह अट्ठारस । चतुत्थे तथेव लोभमानेन ॥

२६. पञ्चमे पन पटिघसम्पयुत्ते असंखारिके दोसो, इस्सा, मच्छरियं, कुक्कुच्चं चेति चतूहि सद्धिं पीतिवज्जिता ते एव वीसति धम्मा संगय्हन्ति ॥ इस्सामच्छेरकुक्कुच्चानि पनेत्थ पच्चेकमेव योजेतब्बानि ॥ ससंखारिकपञ्चके पि तथेव थीनमिद्धेन विसेसेत्वा योजेतब्बा ॥

२७. छन्दपीतिविवज्जिता पन अञ्ञसमाना एकादस, अकुसलसाधारणा चत्तारो चा ति पन्नरस धम्मा उद्धच्चसहगते सम्पयुज्जन्ति ॥ विचिकिच्छासहगतचित्ते च अधिमोक्खविरहिता विचिकिच्छासहगता तथेव पन्नरस धम्मा समुपलब्भन्ती ति सब्बथा पि द्वादसाकुसलचित्तुप्पादेसु पच्चेकं योजियमाना पि गणनवसेन सत्तधा व संगहिता भवन्ती ति ॥

२८. एकूनवीसट्ठारस वीसेकवीस वीसति ।
द्वावीस पन्नरसेति सत्तधाकुसले ठिता ॥
साधारणा च चत्तारो समाना च दसापरे ।
चुद्दसेते पवुच्चन्ति सब्बाकुसलयोगिनो ॥

२९. अहेतुकेसु पन हसनचित्ते ताव छन्दवज्जिता अञ्ञसमाना द्वादस धम्मा संगहं गच्छन्ति । तथा वोट्ठपने छन्दपीतिवज्जिता । सुखसंतीरणे छन्दविरियवज्जिता । मनोधातुत्तिकाहेतुकपटिसन्धियुगले छन्दपीतिविरियवज्जिता । द्विपञ्चविञ्ञाणे पकिण्णकवज्जिता ते येव संगय्हन्ती ति सब्बथा पि अट्ठारससु अहेतुकेसु गणनवसेन चतुधा व संगहो होती ति ॥

३०. द्वादसेकादस दस सत्त चा ति चतुब्बिधो ।
अट्ठारसाहेतुकेसु चित्तुप्पादेसु संगहो ॥

अहेतुकेसु सब्बत्थ सत्त सेसा यथारहं ।
इति वित्थारतो वुत्तो तेत्तिंसविधसंगहो ॥
इत्थं चित्ताविपुत्तानं संपयोगं च संगहं ।
ञत्वा भेदं यथायोगं चित्तेन समभुद्दिसे ॥

इति अभिधम्मत्थसंगहे चेतसिकसंगहविभागो नाम
दुतियो परिच्छेदो ॥

३.

(पकिण्णकसंगहविभागो)

१. संपयुत्ता यथायोगं तेपञ्ञास सभावतो ।
चित्तचेतसिका धम्मा तेसं दानि यथारहं ॥
वेदनाहेतुतो किच्चद्वारारम्मणवत्थुतो ।
चित्तुप्पादवसेनेव संगहो नाम नीयते ॥

२. तत्थ वेदनासंगहे ताव तिविधा वेदना, सुखं, दुक्खं, अदुक्खमसुखं चेति । सुखं, दुक्खं, सोमनस्सं, दोमनस्सं, उपेक्खा ति च भेदेन पन पञ्चधा होति ॥

३. तत्थ सुखसहगतं कुसलविपाकं कायविञ्ञाणमेकमेव । तथा दुक्खसहगतं अकुसलविपाकं कायविञ्ञाणं ॥ सोमनस्ससहगतचित्तानि पन लोभमूलानि चत्तारि । द्वादस कामावचरसोभनानि । सुखसंतीरण-हसनानि च द्वे ति अट्ठारस कामावचरचित्तानि चेव पठम-दुतिय-ततिय-चतुत्थज्झानसंखातानि चतुचत्तालीस महग्गतलोकुत्तरचित्तानि चेति द्वासट्ठिविधानि भवन्ति ॥ दोमनस्ससहगत-

चित्तानि पन द्वे पटिघचित्तानेव ॥ सेसानि सब्बानि पि पञ्चपञ्ञास उपेक्खासहगतचित्तानेवा ति ॥

४. सुखं दुक्खं उपेक्खा ति तिविधा तत्थ वेदना ।
सोमनस्सं दोमनस्समिति भेदेन पञ्चधा ॥
सुखमेकत्थ दुक्खं च दोमनस्सं द्वये ठितं ।
द्वासट्ठिसु सोमनस्सं पञ्चपञ्ञासकेतरा ॥

५. हेतुसंगहे हेतवो नाम, लोभो, दोसो, मोहो, अलोभो, अदोसो, अमोहो चा ति छद्धा भवन्ति ॥

६. तत्थ पञ्चद्वारावज्जन-द्विपञ्चविञ्ञाण-संपटिच्छन-संतीरण-वोट्ठपन-हसनवसेन अट्ठारस अहेतुकचित्तानि नाम ॥ सेसानि सब्बानि पि एकसत्तति चित्तानि सहेतुकानेव ॥

७. तत्रापि द्वे मोमूहचित्तानि एकहेतुकानि । सेसानि दस अकुसलचित्तानि चेव ञाणविप्पयुत्तानि द्वादस कामावचरसोभनानि चेति द्वावीसति दुहेतुकचित्तानि ॥ द्वादस ञाणसंपयुत्तकामावचरसोभनानि चेव पञ्चतिंस महग्गतलोकुत्तरचित्तानि चेति सत्तचत्तालीस तिहेतुकचित्तानी ति ॥

८. लोभो दोसो च मोहो च हेतू अकुसला तयो ।
अलोभादोसामोहा च कुसलाब्याकता तथा ॥
अहेतुकट्ठारसेकहेतुका द्वे दुवीसति ।
दुहेतुका मता सत्तचत्ताळीस तिहेतुका ॥

९. किच्चसंगहे किच्चानि नाम पटिसंधि-भवंगावज्जन-दस्सन-सवन-घायन-सायन-फुसन-संपटिच्छन-संतीरण-वोट्ठपन-जवन-तदारम्मण-चुतिवसेन चुद्दसविधानि भवन्ति ॥ पटिसंधि-भवंगावज्जन-पञ्चविञ्ञाणट्ठानादिवसेन पन तेसं दसधा ठानभेदो वेदितब्बो ॥

१०. तत्थ द्वे उपेक्खासहगतसंतीरणानि चेव अट्ठ महाविपाकानि च, नव रूपारूपविपाकानि चेति एकूनवीसति चित्तानि पटिसंधि-भवंग-चुतिकिच्चानि नाम ॥ आवज्जनकिच्चानि पन द्वे । तथा दस्सन-सवन-घायन-सायन-फुसन-संपटिच्छनकिच्चानि च॥ तीणि संतीरणकिच्चानि ॥ मनोद्वारावज्जनमेव पञ्चद्वारे वोट्ठपनकिच्चं साधेति ॥ आवज्जनद्वयवज्जितानि कुसलाकुसल-फल-कियाचित्तानि पञ्चपञ्ञास जवनकिच्चानि ॥ महाविपाकानि चेव संतीरणत्तयं चेति एकादस तदारम्मणकिच्चानि ॥

११. तेसु पन द्वे उपेक्खासहगतसंतीरणचित्तानि पटिसंधि-भवंग-चुति-तदारम्मण-संतीरणवसेन पञ्चकिच्चानि नाम ॥ महाविपाकानि अट्ठ पटिसंधि-भवंग-चुति-तदारम्मणवसेन चतुकिच्चानि ॥ महग्गतविपाकानि नव पटिसंधि-भवंग-चुतिवसेन तिकिच्चानि ॥ सोमनस्ससहगतं संतीरणं संतीरण-तदारम्मणवसेन दुकिच्चं । तथा वोट्ठपनं च वोट्ठपनावज्जनवसेन ॥ सेसानि पन सब्बानि पि जवन-मनोधातुत्तिक-द्विपञ्चविञ्ञाणानि यथासंभवमेककिच्चानी ति ॥

१२. पटिसंधादयो नाम किच्चभेदेन चुद्दस ।
दसधा ठानभेदेन चित्तुप्पादा पकासिता ॥
अट्ठसट्ठि तथा द्वे च नवट्ठ द्वे यथाक्कमं ।
एक-द्वि-ति-चतु-पञ्चकिच्चट्ठानानि निद्दिसे ॥

१३. द्वारसंगहे द्वारानि नाम, चक्खुद्वारं, सोतद्वारं, घानद्वारं, जिव्हाद्वारं, कायद्वारं, मनोद्वारं चेति छब्बिधानि भवन्ति ॥

१४. तत्थ चक्खुमेव चक्खुद्वारं । तथा सोतादयो सोतद्वारादीनि ॥ मनोद्वारं पन भवंगं ति पवुच्चति ॥

१५. तत्थ पञ्चद्वारावज्जन-चक्खुविञ्ञाण-संपटिच्छन-संतीरण-वोट्ठपन-कामावचरजवन-तदारम्मणवसेन छचत्तालीस चित्तानि च-

मुत्तानं च पटिसंधिभवंगचुतिसंखातानं छब्बिधं पि यथासंभवं येभुय्येन भवन्तरे छद्वारगहितं पच्चुप्पन्नमतीतं पञ्ञत्तिभूतं वा कम्म-कम्मनिमित्त-गतिनिमित्तसंमतं आरम्मणं होति ॥

२२. तेसु चक्खुविञ्ञाणादीनि यथाक्कमं रूपादिएकेकारम्मणानेव ॥ मनोधातुत्तिकं पन रूपादिपञ्चारम्मणं ॥ सेसानि कामावचरविपाकानि हसनचित्तं चेति सब्बथा पि कामावचरारम्मणानेव ॥ अकुसलानि चेव ञाणविप्पयुत्तकामावचरजवनानि चेति लोकुत्तरवज्जितसब्बारम्मणानि ॥ ञाणसंपयुत्तकामावचरकुसलानि चेव पञ्चमज्झानसंखातं अभिञ्ञाकुसलं चेति अरहत्तमग्गफलवज्जितसब्बारम्मणानि ॥ ञाणसंपयुत्तकामावचरक्रियानि चेव क्रियाभिञ्ञावोट्ठपनं चेति सब्बथा पि सब्बारम्मणानि ॥ आरुप्पेसु दुतियचतुत्थानि महग्गतारम्मणानि ॥ सेसानि महग्गतचित्तानि सब्बानि पि पञ्ञत्तारम्मणानि ॥ लोकुत्तरचित्तानि निब्बानारम्मणानी ति ॥

२३ पञ्चवीस परित्तम्हि छ चित्तानि महग्गते ।
एकवीसति वोहारे अट्ठ निब्बानगोचरे ॥
वीसानुत्तरमुत्तम्हि अग्गमग्गफलुज्झिते ।
पञ्च सब्बत्थ छच्चेति सत्तधा तत्थ संगहो ॥

२४. वत्थुसंगहे वत्थूनि नाम चक्खु-सोत-घान-जिव्हा-काय-हदयवत्थु चेति छब्बिधानि भवन्ति ॥ तानि कामलोके सब्बानि पि लब्भन्ति ॥ रूपलोके पन घानादित्तयं नत्थि ॥ अरूपलोके पन सब्बानि पि न संविज्जन्ति ॥

२५. तत्थ पञ्च विञ्ञाणधातुयो यथाक्कमं एकन्तेन पञ्च पसादवत्थूनि निस्सायेव पवत्तन्ति ॥ पञ्चद्वारावज्जन-संपटिच्छनसंखाता पन मनोधातु च हदयं निस्सिता येव पवत्तन्ति ॥ अवसेसा पन मनोविञ्ञाणधातुसंखाता च संतीरण-महाविपाक-पटिघद्वय-पठम-

मग्ग-दमन-रूपावचरवसेन हृदयं निस्सायेव पवत्तन्ति ॥ अवसेसा कुसलाकुसलक्रियानुत्तरवसेन पन निस्साय वा अनिस्साय वा ॥ आरुप्पविपाकवसेन हृदयं अनिस्सायेवा ति ॥

२६. छवत्थुं निस्सिता कामे सत्त रूपे चतुब्बिधा।
तिवत्थुं निस्सितारुप्पे धात्वेकानिस्सिता मता ॥
तेचत्ताळीस निस्साय द्वेचत्ताळीस जायरे।
निस्साय च अनिस्साय पाकारुप्पा अनिस्सिता ॥

इति अभिधम्मत्थसंगहे पकिण्णकसंगहविभागो नाम ततियो परिच्छेदो ॥

४.

(वीथिसंगहविभागो)

१. चित्तुप्पादानमिच्चेवं कत्वा संगहमुत्तरं।
भूमिपुग्गलभेदेन पुब्बापरनियामितं ॥
पवत्तिसंगहं नाम पटिसन्धिपवत्तियं।
पवक्खामि समासेन यथासंभवतो कथं ॥

२. छ वत्थूनि, छ द्वारानि, छ आरम्मणानि, छ विञ्ञाणानि, छ वीथियो, छद्धा विसयप्पवत्ति चेति वीथिसंगहे छ छक्कानि वेदितब्बानि ॥

३. वीथिमुत्तानं पन कम्म-कम्मनिमित्त-गतिनिमित्तवसेन तिविधा होति विसयप्पवत्ति ॥

४. तत्थ वत्थुद्वारारम्मणानि पुब्बे वुत्तनयानेव ॥

५. चक्खुविञ्ञाणं, सोतविञ्ञाणं, घानविञ्ञाणं, जिव्हाविञ्ञाणं, कायविञ्ञाणं, मनोविञ्ञाणं चेति छ विञ्ञाणानि ॥

६. छ वीथियो पन चक्खुद्वारवीथि, सोतद्वारवीथि, घानद्वा
वीथि, जिव्हाद्वारवीथि, कायद्वारवीथि, मनोद्वारवीथि चेति द्वार
सेन वा। चक्खुविञ्ञाणवीथि, सोतविञ्ञाणवीथि, घानविञ्ञा
णवीथि, जिव्हाविञ्ञाणवीथि, कायविञ्ञाणवीथि मनोविञ्ञाण
वीथि चेति विञ्ञाणवसेन वा द्वारप्पवत्ता चित्तप्पवत्तियो योजेत

७. अतिमहन्तं, महन्तं, परित्तं अतिपरित्तं चेति पञ्चद्वारे। मनो
द्वारे विभूतमविभूतं चेति छद्धा विसयप्पवत्ति वेदितब्बा॥

८. कथं? उप्पादट्ठितिभङ्गवसेन खणत्तयं एकचित्तक्खणं नाम।
तानि पन सत्तरस चित्तक्खणानि रूपधम्मानमायु॥ एकचित्तक्ख
णातीतानि वा बहुचित्तक्खणातीतानि वा ठितिप्पत्तानेव पञ्चालम्ब
नानि पञ्चद्वारे आपाथमागच्छन्ति॥ तस्मा यदि एकचित्तक्खणा
तीतकं रूपारम्मणं चक्खुस्स आपाथमागच्छति, ततो द्वि
भवङ्गे चलिते भवङ्गसोतं वोच्छिन्दित्वा तमेव रूपारम्मणं आव
पञ्चद्वारावज्जनचित्तं उप्पज्जित्वा निरुज्झति॥ ततो तस्सानन्त
तमेव रूपं पस्सन्तं चक्खुविञ्ञाणं। सम्पटिच्छन्तं सम्पटिच्छनचित्तं
सन्तीरयमानं सन्तीरणचित्तं। ववत्थपेन्तं वोट्ठब्बनचित्तं चेति यथाक्क
उप्पज्जित्वा निरुज्झन्ति॥ ततो परं एकूनतिंसकामावचरजवनेसु
यंकिञ्चि लद्धप्पच्चयं येभुय्येन सत्तक्खत्तुं जवति। जवनानुबन्धानि च
द्वे तदारम्मणपाकानि यथारहं पवत्तन्ति॥ ततो परं भवङ्गपातो॥

९. एत्तावता चुद्दस वीथिचित्तुप्पादा, द्वे भवङ्गचलनानि, पुब्बे
वातीतकमेकचित्तक्खणन्ति कत्वा सत्तरस चित्तक्खणानि परिपूरेन्ति।
ततो परं निरुज्झति॥ आरम्मणमेतं अतिमहन्तं नाम गोचरं॥ याव
तदारम्मणुप्पादा पन अप्पहोन्तातीतकमापाथमागतं आरम्मणं महन्तं
नाम॥ तत्थ जवनावसाने भवङ्गपातो व होति, नत्थि तदारम्मणु
पादो॥ याव जवनुप्पादापि अप्पहोन्तातीतकमापाथमागतं आर

म्मणं परित्तं नाम ॥ तत्थ जवनं पि अनुप्पज्जित्वा द्वित्तिक्खत्तुं वोट्ठपनमेव पवत्तति । ततो परं भवंगपातो व होति ॥ याव वोट्ठपनुप्पादा च पन अप्पहोन्तातीतकमापाथमागतं निरोधासन्नमारम्मणं अतिपरित्तं नाम ॥ तत्थ भवंगचलनमेव होति, नत्थि वीथिचित्तुप्पादो ॥ इच्चेवं चक्खुद्वारे, तथा सोतद्वारादिसु चेति सब्बथा पि पञ्चद्वारे तदारम्मण-जवन-वोट्ठपन-मोघवारसंखातानं चतुन्नं वारानं यथाक्कमं आरम्मणभूता विसयप्पवत्ति चतुधा वेदितब्बा ॥

१०. वीथिचित्तानि सत्तेव चित्तुप्पादा चतुद्दस ।
चतुपञ्ञास वित्थारा पञ्चद्वारे यथारहं ॥

अयमेत्थ पञ्चद्वारे वीथिचित्तप्पवत्तिनयो ॥

११. मनोद्वारे पन यदि विभूतमारम्मणं आपाथमागच्छति, ततो परं भवंगचलन-मनोद्वारावज्जन-जवनावसाने तदारम्मणपाकानि पवत्तन्ति । ततो परं भवंगपातो ॥ अविभूते पनारम्मणे जवनावसाने भवंगपातो व होति । नत्थि तदारम्मणुप्पादो ति ॥

१२. वीथिचित्तानि तीणेव चित्तुप्पादा दसेरिता ।
वित्थारेन पनेत्थेकचत्ताळीस विभावये ॥

अयमेत्थ परित्तजवनवारो ॥

१३. अप्पनाजवनवारे पन विभूताविभूतभेदो नत्थि । तथा तदारम्मणुप्पादो च ॥ तत्थ हि ञाणसंपयुत्तकामावचरजवनानमट्ठन्नं अञ्ञतरस्मि परिकम्मोपचारानुलोमगोत्रभुनामेन चतुक्खत्तुं तिक्खत्तुमेव वा यथाक्कमं उप्पज्जित्वा निरुद्धानन्तरमेव यथारहं चतुत्थं पञ्चमं वा छब्बीसति महग्गतलोकुत्तरजवनेसु यथाभिनीहारवसेन यं किञ्चि जवनं अप्पनावीथिमोतरति ॥ ततो परं अप्पनाजवनावसाने भवंगपातो व होति ॥

१४. तत्थ सोमनस्ससहगतजवनानन्तरं अप्पना पि सोमनस्स-

हगता व पाटिकंखितब्बा। उपेक्खासहगतजवनानन्तरं उपेक्खासहगता व॥ तत्थापि कुसलजवनानन्तरं कुसलजवनं चेव हेट्ठिमं च फलद्वयमपेति। क्रियाजवनानन्तरं क्रियाजवनं अरहत्तफलं चा ति॥

१५. द्वत्तिंस सुखपुञ्ञम्हा द्वादसोपेक्खका परं।
सुखितक्रियतो अट्ठ छ संभोन्ति उपेक्खका॥
पुथुज्जनान सेक्खानं कामपुञ्ञतिहेतुतो।
तिहेतुकामक्रियतो वीतरागानमप्पना॥

अयमेत्थ मनोद्वारे वीथिचित्तप्पवत्तिनयो॥

१६. सब्बथा पि पनेत्थ अनिट्ठे आरम्मणे अकुसलविपाकानेव पञ्चविञ्ञाण-संपटिच्छन-संतीरण-तदारम्मणानि। इट्ठे कुसलविपाकानि॥ अतिइट्ठे पन सोमनस्ससहगतानेव संतीरणतदारम्मणानि॥ तत्थापि सोमनस्ससहगतक्रियाजवनावसाने सोमनस्ससहगतानेव तदारम्मणानि भवन्ति। उपेक्खासहगतक्रियाजवनावसाने च उपेक्खासहगतानि होन्ति॥

१७. दोमनस्ससहगतजवनावसाने पन तदारम्मणानि चेव भवंगानि च उपेक्खासहगतानेव भवन्ति॥ तस्मा यदि सोमनस्सपटिसन्धिकस्स दोमनस्ससहगतजवनावसाने तदारम्मणसंभवो नत्थि, तदा यं किंचि परिचितपुब्बं परित्तारम्मणमारब्भ उपेक्खासहगतसंतीरणं उप्पज्जति॥ तमनन्तरित्वा भवंगपातो व होती ति वदन्ति आचरिया॥ तथा कामावचरजवनावसाने कामावचरसत्तानं कामावचरधम्मेस्वेव आरम्मणभूतेसु तदारम्मणं इच्छन्ती ति॥

१८. कामे जवनसत्तारम्मणानं नियमे सति।
विभूतेऽतिमहन्ते च तदारम्मणमीरितं॥

अयमेत्थ तदारम्मणनियमो॥

१९. जवनेसु च परित्तजवनवीथियं कामावचरजवनानि सत्तक्खत्तुं

छक्खत्तुमेव वा जवन्ति ॥ मंदप्पवत्तियं पन मरणकालादिसु पञ्चवारमेव ॥ भगवतो पन यमकपाटिहारियकालादिसु लहुकप्पवत्तियं चत्तारि पञ्च वा पच्चवेक्खणचित्तानि भवन्ती ति पि वदन्ति ॥ आदिकम्मिकस्स पन पठमकप्पनायं महग्गतजवनानि अभिञ्ञाजवनानि च सब्बथा पि एकवारमेव जवन्ति। ततो परं भवंगपातो व ॥ चत्तारो पन मग्गुप्पादा एकचित्तक्खणिका। ततो परं द्वे तीणि फलचित्तानि यथारहं उप्पज्जन्ति। ततो परं भवंगपातो ॥ निरोधसमापत्तिकाले द्विक्खत्तुं चतुत्थारूप्पजवनं जवति। ततो परं निरोधं फुसति ॥ वुट्ठानकाले च अनागामिफलं वा अरहत्तफलं वा यथारहमेकवारं उप्पज्जित्वा निरुद्धे भवंगपातो व होति ॥ सब्बथा पि समापत्तिवीथियं भवंगसोतो विय वीथिनियमो नत्थी ति कत्वा बहूनि पि लब्भन्ती ति ॥

२०. सत्तक्खत्तुं परित्तानि मग्गाभिञ्ञा सकिं मता।
अवसेसानि लब्भन्ति जवनानि बहूनि पि ॥

अयमेत्थ जवननियमो ॥

२१. दुहेतुकानमहेतुकानं च पनेत्थ क्रियाजवनानि चेव अप्पनाजवनानि च न लब्भन्ति ॥ तथा ञाणसंपयुत्तविपाकानि च सुगतियं ॥ दुग्गतियं पन ञाणविप्पयुत्तानि च महाविपाकानि न लब्भन्ति ॥

२२. तिहेतुकेसु च खीणासवानं कुसलाकुसलजवनानि च न लब्भन्ति। तथा सेक्खपुथुज्जनानं क्रियाजवनानि॥ दिट्ठिगतसंपयुत्तविचिकिच्छाजवनानि च सेक्खानं ॥ अनागामिपुग्गलानं पन पटिघजवनानि च न लब्भन्ति ॥ लोकुत्तरजवनानि च यथारहं अरियानमेव समुप्पज्जन्ती ति ॥

सहगता व पाटिकंखितब्बा। उपेक्खासहगतजवनानन्तरं उपेक्खासहगता व॥ तत्थापि कुसलजवनानन्तरं कुसलजवनं चेव हेट्ठिमं च फलत्तयमप्पेति। क्रियाजवनानन्तरं क्रियाजवनं अरहत्तफलं चा ति॥

१५. द्वत्तिस सुखपुञ्ञम्हा द्वादसोपेक्खका परं।
सुखितक्रियतो अट्ठ छ संभोन्ति उपेक्खका॥
पुथुज्जनान सेक्खानं कामपुञ्ञतिहेतुतो।
तिहेतुकामक्रियतो वीतरागानमप्पना॥

अयमेत्थ मनोद्वारे वीथिचित्तप्पवत्तिनयो॥

१६. सब्बथा पि पनेत्थ अनिट्ठे आरम्मणे अकुसलविपाकानेव पञ्चविञ्ञाण-संपटिच्छन-संतीरण-तदारम्मणानि। इट्ठे कुसलविपाकानि॥ अतिइट्ठे पन सोमनस्ससहगतानेव संतीरणतदारम्मणानि॥ तत्थापि सोमनस्ससहगतक्रियाजवनावसाने सोमनस्ससहगतानेव तदारम्मणानि भवन्ति। उपेक्खासहगतक्रियाजवनावसाने च उपेक्खासहगतानि होन्ति॥

१७. दोमनस्ससहगतजवनावसाने पन तदारम्मणानि चेव भवंगानि च उपेक्खासहगतानेव भवन्ति॥ तस्मा यदि सोमनस्सपटिसंधिकस्स दोमनस्ससहगतजवनावसाने तदारम्मणसंभवो नत्थि, तदा यं किञ्चि परिचितपुब्बं परित्तारम्मणमारब्भ उपेक्खासहगत-संतीरणं उप्पज्जति॥ तमनन्तरित्वा भवंगपातो व होती ति वदन्ति आचरिया॥ तथा कामावचरजवनावसाने कामावचरसत्तानं कामावचरधम्मेस्वेव आरम्मणभूतेसु तदारम्मणं इच्छन्ती ति॥

१८. कामे जवनसत्तारम्मणानं नियमे सति।
विभूतेतिमहन्ते च तदारम्मणमीरितं॥

अयमेत्थ तदारम्मणनियमो॥

१९. जवनेसु च परित्तजवनवीथियं कामावचरजवनानि सत्तक्खत्तुं

छक्खत्तुमेव वा जवन्ति ॥ मंदप्पवत्तियं पन मरणकालादिसु पञ्चवारमेव ॥ भगवतो पन यमकपाटिहारियकालादिसु लहुकप्पवत्तियं चत्तारि पञ्च वा पच्चवेक्खणचित्तानि भवन्ती ति पि वदन्ति ॥ आदिकम्मिकस्स पन पठमकप्पनायं महग्गतजवनानि अभिञ्ञाजवनानि च सब्बथा पि एकवारमेव जवन्ति। ततो परं भवंगपातो व ॥ चत्तारो पन मग्गुप्पादा एकचित्तक्खणिका। ततो परं द्वे तीणि फलचित्तानि यथारहं उप्पज्जन्ति। ततो परं भवंगपातो ॥ निरोधसमापत्तिकाले द्विक्खत्तुं चतुत्थारुप्पजवनं जवति। ततो परं निरोधं फुसति ॥ वुट्ठानकाले च अनागामिफलं वा अरहत्तफलं वा यथारहमेकवारं उप्पज्जित्वा निरुद्धे भवंगपातो व होति ॥ सब्बथा पि समापत्तिवीथियं भवंगसोतो विय वीथिनियमो नत्थी ति कत्वा बहूनि पि लब्भन्ती ति ॥

२०. सत्तक्खत्तुं परित्तानि मग्गाभिञ्ञा सकिं मता।
अवसेसानि लब्भन्ति जवनानि बहूनि पि ॥

अयमेत्थ जवननियमो ॥

२१. दुहेतुकानमहेतुकानं च पनेत्थ क्रियाजवनानि चेव अप्पनाजवनानि च न लब्भन्ति ॥ तथा ञाणसंपयुत्तविपाकानि च सुगतियं ॥ दुग्गतियं पन ञाणविप्पयुत्तानि च महाविपाकानि न लब्भन्ति ॥

२२. तिहेतुकेसु च खीणासवानं कुसलाकुसलजवनानि च न लब्भन्ति। तथा सेक्खपुथुज्जनानं क्रियाजवनानि॥ दिट्ठिगतसंपयुत्तविचिकिच्छाजवनानि च सेक्खानं ॥ अनागामिपुग्गलानं पन पटिघजवनानि च न लब्भन्ति ॥ लोकुत्तरजवनानि च यथारहं अरियानमेव समुप्पज्जन्ती ति ॥

सहगता व पाटिकङ्खितब्बा। उपेक्खासहगतजवनानन्तरं उपेक्खासहगता व ॥ तत्थापि कुसलजवनानन्तरं कुसलजवनं चेव हेट्ठिमं च फलत्तयमप्पेति। क्रियाजवनानन्तरं क्रियाजवनं अरहत्तफलं चा ति ॥

१५. द्वत्तिंस सुखपुञ्ञम्हा द्वादसोपेक्खका परं।
सुखितक्रियतो अट्ठ छ संभोन्ति उपेक्खका ॥
पुथुज्जनान सेक्खानं कामपुञ्ञतिहेतुतो।
तिहेतुकामक्रियतो वीतरागानमप्पना ॥

अयमेत्थ मनोद्वारे वीथिचित्तप्पवत्तिनयो ॥

१६. सब्बत्था पि पनेत्थ अनिट्ठे आरम्मणे अकुसलविपाकानेव पञ्चविञ्ञाण-संपटिच्छन-संतीरण-तदारम्मणानि। इट्ठे कुसलविपाकानि ॥ अतिइट्ठे पन सोमनस्ससहगतानेव संतीरणतदारम्मणानि ॥ तत्थापि सोमनस्ससहगतक्रियाजवनावसाने सोमनस्ससहगतानेव तदारम्मणानि भवन्ति। उपेक्खासहगतक्रियाजवनावसाने च उपेक्खासहगतानि होन्ति ॥

१७. दोमनस्ससहगतजवनावसाने पन तदारम्मणानि चेव भवंगानि च उपेक्खासहगतानेव भवन्ति ॥ तस्मा यदि सोमनस्सपटिसंधिकस्स दोमनस्ससहगतजवनावसाने तदारम्मणसंभवो नत्थि, तदा यं किञ्चि परिचितपुब्बं परित्तारम्मणमारब्भ उपेक्खासहगतसंतीरणं उप्पज्जति ॥ तमनन्तरित्वा भवंगपातो व होती ति वदन्ति आचरिया ॥ तथा कामावचरजवनावसाने कामावचरसत्तानं कामावचरधम्मेस्वेव आरम्मणभूतेसु तदारम्मणं इच्छन्ती ति ॥

१८. कामे जवनसत्तारम्मणानं नियमे सति।
विभूतेतिमहन्ते च तदारम्मणमीरितं ॥

अयमेत्थ तदारम्मणनियमो ॥

१९. जवनेसु च परित्तजवनवीथियं कामावचरजवनानि सत्तक्खत्तुं

३. तत्थ अपायभूमि, कामसुगतिभूमि, रूपावचरभूमि, अरूपावचरभूमि चेति चतस्सो भूमियो नाम ॥

४. तासु निरयो, तिरच्छानयोनि, पेत्तिविसयो, असुरकायो चेति अपायभूमि चतुब्बिधा होति ॥

५. मनुस्सा, चातुम्महाराजिका, तावतिंसा, यामा, तुसिता, निम्मानरति, परनिम्मितवसवत्ती चेति कामसुगतिभूमि सत्तविधा होति ॥ सा पनायमेकादसविधा पि कामावचरभूमिच्चेव संखं गच्छति ॥

६. ब्रह्मपारिसज्जा, ब्रह्मपुरोहिता, महाब्रह्मा चेति पठमज्झानभूमि। परित्ताभा, अप्पमाणाभा, आभस्सरा चेति दुतियज्झानभूमि। परित्तसुभा, अप्पमाणसुभा, सुभकिण्हा चेति ततियज्झानभूमि। वेहप्फला, असञ्ञसत्ता, सुद्धावासा चेति चतुत्थज्झानभूमी ति रूपावचरभूमि सोळसविधा होति ॥ अविहा, अतप्पा, सुदस्सा, सुदस्सी, अकनिट्ठा चेति सुद्धावासभूमि पञ्चविधा होति ॥

७. आकासानञ्चायतनभूमि। विञ्ञाणञ्चायतनभूमि। आकिञ्चञ्ञायतनभूमि। नेवसञ्ञानासञ्ञायतनभूमि चेति अरूपभूमि चतुब्बिधा होति ॥

८. पुथुज्जना न लब्भन्ति सुद्धावासेसु सब्बथा।
सोतापन्ना च सकदागामिनो चापि पुग्गला ॥
अरिया नोपलब्भन्ति असञ्ञापायभूमिसु।
सेसट्ठानेसु लब्भन्ति अरियानरिया पि च ॥

इदमेत्थ भूमिचतुक्कं ॥

९. अपायपटिसंधि, कामसुगतिपटिसंधि, रूपावचरपटिसंधि, अरूपावचरपटिसंधि चेति चतुब्बिधा पटिसंधि नाम ॥

१०. तत्थ अकुसलविपाकोपेक्खासहगतसंतीरणं अपायभूमियं

२३. असेक्खानं चतुचत्ताळीस सेक्खानमुद्दिसे ।
छत्तिंसावसेसानं चतुपञ्ञास संभवा ॥

अयमेत्थ पुग्गलभेदो ॥

२४. कामावचरभूमियं पनेतानि सब्बानि वीथिचित्तानि यथारहं उपलब्भन्ति । रूपावचरभूमियं पटिघजवनतदारम्मणवज्जितानि । अरूपावचरभूमियं पठममग्ग-रूपावचर-हसन-हेट्ठिमारुप्पवज्जितानि च लब्भन्ति ॥ सब्बत्थापि च तंतंपसादरहितानं तंतंद्वारिकवीथिचित्तानि न लब्भन्तेव ॥ असञ्ञसत्तानं पन सब्बथापि चित्तप्पवत्ति नत्थेवा ति ॥

२५. असीति वीथिचित्तानि कामे रूपे यथारहं ।
चतुसट्ठि तथारूपे द्वेचत्ताळीस लब्भरे ॥

अयमेत्थ भूमिविभागो ॥

२६. इच्चेवं छद्वारिकचित्तप्पवत्ति यथासंभवं भवङ्गन्तरिता यावतायुकमब्बोच्छिन्ना पवत्तति ॥

इति अभिधम्मत्थसंगहे वीथिसंगहविभागो नाम
चतुत्थो परिच्छेदो ॥

५.

(वीथिमुत्तसंगहविभागो)

१. वीथिचित्तवसेनेवं पवत्तियमुदीरितो ।
पवत्तिसंगहो नाम सन्धियं दानि वुच्चति ॥

२. चतस्सो भूमियो । चतुब्बिधा पटिसन्धि । चत्तारि कम्मानि । चतुधा मरणुप्पत्ति चेति वीथिमुत्तसंगहे चत्तारि चतुक्कानि वेदितब्बानि ॥

३. तत्य अपायभूमि, कामसुगतिभूमि, रूपावचरभूमि, अरू पावचरभूमि चेति चतस्सो भूमियो नाम ॥

४. तासु निरयो, तिरच्छानयोनि, पेत्तिविसयो, असुरकायो चेति अपायभूमि चतुब्बिधा होति ॥

५. मनुस्सा, चातुम्महाराजिका, तावतिंसा, यामा, तुसिता, निम्मानरति, परनिम्मितवसवत्ती चेति कामसुगतिभूमि सत्तविधा होति ॥ सा पनायमेकादसविधा पि कामावचरभूमिच्चेव संखं [illegible] ॥

६. ब्रह्मपारिसज्जा, ब्रह्मपुरोहिता, महाब्रह्मा चेति पठमज्झानभूमि । परित्ताभा, अप्पमाणाभा, आभस्सरा चेति दुतियज्झानभूमि। परित्तसुभा, अप्पमाणसुभा, सुभकिण्हा चेति ततियज्झानभूमि। [illegible], असञ्ञसत्ता, सुद्धावासा चेति चतुत्थज्झानभूमि ति रूपावचरभूमि सोळसविधा होति ॥ अविहा, अतप्पा, सुदस्सा, सुदस्सी, अकनिट्ठा चेति सुद्धावासभूमि पञ्चविधा होति ॥

७. आकासानञ्चायतनभूमि । विञ्ञाणञ्चायतनभूमि । आकि[illegible]भूमि । नेवसञ्ञानासञ्ञायतनभूमि चेति अरूपभूमि चतुब्बिधा होति ॥

८. पुथुज्जना न लब्भन्ति सुद्धावासेसु सब्बथा ।
सोतापन्ना च सकदागामिनो चापि पुग्गला ॥
अरिया नोपलब्भन्ति असञ्ञापायभूमिसु ।
सेसट्ठानेसु लब्भन्ति अरियानरिया पि च ॥
[illegible]मेत्य भूमिचतुक्कं ॥

अपायपटिसंधि, कामसुगतिपटिसंधि, रूपावचरपटिसंधि, [illegible]वचरपटिसंधि चेति चतुब्बिधा पटिसंधि नाम ॥

तत्य अकुसलविपाकोपेक्खासहगतसंतीरणं अपायभूमियं

ओकन्तिक्खणे पटिसंधि हुत्वा, ततो परं भवंगं, परियोसाने चवनं हुत्वा वोच्छिज्जति ॥ अयमेकापायपटिसंधि नाम ॥

११. कुसलविपाकोपेक्खासहगतसंतीरणं पन कामसुगतियं मनुस्सानं चेव जचंधादीनं, भुम्मनिस्सितानं च विनिपातिकासुरानं पटिसंधि-भवंग-चुतिवसेन पवत्तति ॥ महाविपाकानि पन अट्ठ सब्बथा पि कामसुगतियं पटिसंधि-भवंग-चुतिवसेनेव पवत्तन्ति ॥ इमा नव कामसुगतिपटिसंधियो नाम ॥ सा पनायं दसविधा पि कामावचरपटिसंधिच्चेव संखं गच्छति ॥

१२. तेसु चतुन्नं अपायानं, मनुस्सानं, विनिपातिकासुरानं च आयुप्पमाणगणनाय नियमो नत्थि ॥ चातुम्महाराजिकानं पन देवानं दिब्बानि पञ्च वस्ससतानि आयुप्पमाणं । मनुस्सगणनाय नवुतिवस्ससतसहस्सप्पमाणं होति ॥ ततो चतुग्गुणं तावतिंसानं ॥ ततो चतुग्गुणं यामानं ॥ ततो चतुग्गुणं तुसितानं ॥ ततो चतुग्गुणं निम्मानरतीनं ॥ ततो चतुग्गुणं परनिम्मितवसवत्तीनं ॥

१३. नवसतं चेकवीस वस्सानं कोटियो तथा ।
वस्ससतसहस्सानि सट्ठि च वसवत्तिसु ॥

१४. पठमज्झानविपाकं पठमज्झानभूमियं पटिसंधि-भवंग-चुतिवसेन पवत्तति । तथा दुतियज्झानविपाकं ततियज्झानविपाकं च दुतियज्झानभूमियं । चतुत्थज्झानविपाकं ततियज्झानभूमियं । पञ्चमज्झानविपाकं चतुत्थज्झानभूमियं ॥ असञ्ञसत्तानं पन रूपमेव पटिसंधि होति । तथा ततो परं पवत्तियं चवनकाले च रूपमेव पवत्तित्वा निरुज्झति ॥ इमा छ रूपावचरपटिसंधियो नाम ॥

१५. तेसु ब्रह्मपारिसज्जानं देवानं कप्पस्स ततियो भागो आयुप्पमाणं । ब्रह्मपुरोहितानं उपड्ढकप्पो । महाब्रह्मानं एको कप्पो । परित्ताभानं द्वे कप्पानि । अप्पमाणाभानं चत्तारि कप्पानि । आभ-

स्सरानं अट्ठ कप्पानि । परित्तसुभानं सोळस कप्पानि । अप्पमाणसु-भानं द्वत्तिंस कप्पानि । सुभकिण्हानं चतुसट्ठि कप्पानि । वेहप्फलानं, असञ्ञसत्तानं च पञ्च कप्पसतानि । अविहानं कप्पसहस्सानि । अतप्पानं द्वे कप्पसहस्सानि । सुदस्सानं चत्तारि कप्पसहस्सानि । सुदस्सीनं अट्ठ कप्पसहस्सानि । अकनिट्ठानं सोळस कप्पसहस्सानि ॥

१६. पठमारुप्पादिविपाकानि पठमारुप्पादिभूमिसु यथाक्कमं पटिसंधि-भवंग-चुतिवसेन पवत्तन्ति ॥ इमा चतस्सो आरुप्पपटिसंधियो नाम ॥

१७. तेसु पन आकासानञ्चायतनूपगानं देवानं वीसति कप्पसहस्सानि आयुप्पमाणं । विञ्ञाणञ्चायतनूपगानं देवानं चत्ताळीस कप्पसहस्सानि । आकिञ्चञ्ञायतनूपगानं देवानं सट्ठि कप्पसहस्सानि । नेवसञ्ञानासञ्ञायतनूपगानं देवानं चतुरासीति कप्पसहस्सानि ॥

१८. पटिसंधि भवंगं च तथा चवनमानसं ।
एकमेव तथेवेकविसयं चेकजातियं ॥

इदमेत्थ पटिसंधिचतुक्कं ॥

१९. जनकमुपत्थम्भकमुपपीळकमुपघातकं चेति किच्चवसेन । गरुकमासन्नमाचिण्णं, कटत्ताकम्मं चेति पाकदानपरियायेन । दिट्ठधम्मवेदनीयं, उपपज्जवेदनीयं, अपरापरियवेदनीयं, अहोसिकम्मं चेति पाककालवसेनेति चत्तारि कम्मानि नाम ॥ तथा अकुसलं, कामावचरकुसलं, रूपावचरकुसलं, अरूपावचरकुसलं चेति पाकट्ठानवसेन ॥

२०. तत्थ अकुसलं, कायकम्मं, वचीकम्मं, मनोकम्मं चेति कम्मद्वारवसेन तिविधं होति ॥

२१. कथं ? पाणातिपातो, अदिन्नादानं, कामेसु मिच्छाचारो चेति कायविञ्ञत्तिसंखाते कायद्वारे बाहुल्लवुत्तितो कायकम्मं नाम ॥

२२. मुसावादो, पिसुणवाचा, फरुसवाचा, संफप्पलापो चेति

वचीविञ्ञत्तिसंखाते वचीद्वारे बाहुल्लवुत्तितो वचीकम्मं नाम ॥

२३. अभिज्झा, ब्यापादो, मिच्छादिट्ठि चेति अञ्ञत्रापि विञ्ञत्तिया मनस्मिं येव बाहुल्लवुत्तितो मनोकम्मं नाम ॥

२४. तेसु पाणातिपातो, फरुसवाचा, ब्यापादो च दोसमूलेन जायन्ति ॥ कामेसु मिच्छाचारो, अभिज्झा, मिच्छादिट्ठि च लोभमूलेन ॥ सेसानि चत्तारि पि द्वीहि मूलेहि संभवन्ति ॥ चित्तुप्पादवसेन पनेतं अकुसलं सब्बथा पि द्वादसविधं होति ॥

२५. कामावचरकुसलं पि कायद्वारे पवत्तं कायकम्मं, वचीद्वारे पवत्तं वचीकम्मं, मनोद्वारे पवत्तं मनोकम्मं चेति कम्मद्वारवसेन तिविधं होति । तथा दान-सील-भावनावसेन ॥ चित्तुप्पादवसेन पनेतं अट्ठविधं होति ॥ दान-सील-भावना-अपचायन-वेय्यावच्च-पत्तिदान-पत्तानुमोदन-धम्मसवन-धम्मदेसना-दिट्ठिजुकम्मवसेन दसविधं होति ॥ तं पनेतं वीसतिविधं पि कामावचरकम्ममिच्चेव संखं गच्छति ॥

२६. रूपावचरकुसलं पन मनोकम्ममेव ॥ तं च भावनामयं, अप्पनापत्तं, झानङ्गभेदेन पञ्चविधं होति ॥ तथा अरूपावचरकुसलं च मनोकम्मं ॥ तं पि भावनामयं, अप्पनापत्तं, आरम्मणभेदेन चतुब्बिधं होति ॥

२७. एत्थाकुसलकम्ममुद्धच्चरहितं अपायभूमियं पटिसन्धिं जनेति ॥ पवत्तियं पन सब्बं पि द्वादसविधं सत्ताकुसलपाकानि सब्बत्था पि कामलोके रूपलोके च यथारहं विपच्चति ॥

२८. कामावचरकुसलं पि कामसुगतियमेव पटिसन्धिं जनेति । तथा पवत्तियं च महाविपाकानि । अहेतुकविपाकानि पन अट्ठ पि सब्बत्था पि कामलोके रूपलोके च यथारहं विपच्चति ॥

२९. तत्थापि तिहेतुकमुक्कट्ठं कुसलं तिहेतुकं पटिसन्धिं दत्वा पवत्ते

सोळस विपाकानि विपच्चति ॥ तिहेतुकमोमकं द्विहेतुकमुक्कट्ठं च कुसलं द्विहेतुकं पटिसंधिं दत्वा पवत्ते तिहेतुकरहितानि द्वादस पि विपाकानि विपच्चति ॥ द्विहेतुकमोमकं पन कुसलं अहेतुकमेव पटिसंधिं देति, पवत्ते च अहेतुकविपाकानेव विपच्चति ॥

३०. असंखारं ससंखारविपाकानि न पच्चति ।
ससंखारमसंखारविपाकानी ति केचन ॥
तेसं द्वादस पाकानि दसट्ठ च यथाक्कमं ।
यथावुत्तानुसारेन यथासंभवमुद्दिसे ॥

३१. रूपावचरकुसलं पन पठमज्झानं परित्तं भावेत्वा ब्रह्मपारिसज्जेसु उप्पज्जति । तदेव मज्झिमं भावेत्वा ब्रह्मपुरोहितेसु । पणीतं भावेत्वा महाब्रह्मेसु ॥ तथा दुतियज्झानं ततियज्झानं च परित्तं भावेत्वा परित्ताभेसु । मज्झिमं भावेत्वा अप्पमाणाभेसु । पणीतं भावेत्वा आभस्सरेसु ॥ चतुत्थज्झानं परित्तं भावेत्वा परित्तसुभेसु । मज्झिमं भावेत्वा अप्पमाणसुभेसु । पणीतं भावेत्वा सुभकिण्हेसु ॥ पञ्चमज्झानं भावेत्वा वेहप्फलेसु । तदेव सञ्ञाविरागं भावेत्वा असञ्ञसत्तेसु ॥ अनागामिनो पन सुद्धावासेसु उप्पज्जन्ति ॥

३२. अरूपावचरकुसलं च यथाक्कमं भावेत्वा अरूपेसु उप्पज्जन्ती ति ॥

३३. इत्थं महग्गतं पुञ्ञं यथाभूमिववत्थितं ।
जनेति सदिसं पाकं पटिसंधिप्पवत्तियं ॥

इदमेत्थ कम्मचतुक्कं ॥

३४. आयुक्खयेन, कम्मक्खयेन, उभयक्खयेन, उपच्छेदककम्मुना चेति चतुधा मरणुप्पत्ति नाम ॥

३५. तथा च मरन्तानं पन मरणकाले यथारहं अभिमुखीभूतं भवन्तरे पटिसंधिजनकं कम्मं वा, तंकम्मकरणकाले रूपादिकमुपलद्ध-

पुब्बमुपकरणभूतं च कम्मनिमित्तं वा, अनन्तरमुप्पज्जमानभवे उपल-भितब्बं उपभोगभूतं च गतिनिमित्तं वा कम्मबलेन छन्नं द्वारानं अञ्ञतरस्मिं पच्चुपट्ठाति ॥ ततो परं तमेव तथोपट्ठितं आरम्मणं आरब्भ विपच्चमानककम्मानुरूपं परिसुद्धमुपक्किलिट्ठं वा उपलभित-ब्बभवानुरूपं तत्थोणतं व चित्तसंतानं अभिण्हं पवत्तति बाहुल्लेन ॥ तमेव वा पन जनकभूतं कम्ममभिनवकरणवसेन द्वारप्पत्तं होति ॥

३६. पच्चासन्नमरणस्स तस्स वीथिचित्तावसाने भवंगक्खये वा चवनवसेन पच्चुप्पन्नभवपरियोसानभूतं चुतिचित्तमुप्पज्जित्वा निरु-ज्झति ॥ तस्मिं निरुद्धावसाने तस्सानन्तरमेव तथागहितं आरम्म-णमारब्भ सवत्थुकं, अवत्थुकमेव वा यथारहं अविज्जानुसयपरिक्खि-त्तेन तण्हानुसयमूलकेन संखारेन जनीयमानं संपयुत्तेहि परिगय्हमानं सहजातानमधिट्ठानभावेन पुब्बंगमभूतं भवन्तरपटिसंधानवसेन पटि-संधिसंखातं मानसं उप्पज्जमानमेव पतिट्ठाति भवन्तरे ॥

३७. मरणासन्नवीथियं पनेत्थ मंदप्पवत्तानि पञ्चेव जवनानि पाटिकंखितब्बानि ॥ तस्मा यदा पच्चुप्पन्नारम्मणेसु आपाथमागतेसु धरन्तेस्वेव मरणं होति, तदा पटिसंधिभवंगानं पि पच्चुप्पन्नारम्म-णता लब्भती ति कत्वा कामावचरपटिसंधिया छद्वारगहितं कम्म-निमित्तं, गतिनिमित्तं च पच्चुप्पन्नमतीतारम्मणं उपलब्भति । कम्मं पन अतीतमेव ॥ तं च मनोद्वारगहितं ॥ तानि पन सब्बानि पि परित्तधम्मभूतानेवारम्मणानि ॥

३८. रूपावचरपटिसंधिया पन पञ्ञत्तिभूतं कम्मनिमित्तमेवार-म्मणं होति ॥ तथा आरुप्पपटिसंधिया च महग्गतभूतं पञ्ञत्तिभूतं च कम्मनिमित्तमेव यथारहं आरम्मणं होति ॥ असञ्ञसत्तानं जी-वितनवकमेव पटिसंधिभावेन पतिट्ठाति ॥ तस्मा ते रूपपटिसंधिका नाम ॥ अरूपा अरूपपटिसंधिका ॥ सेसा रूपारूपपटिसंधिका ॥

पुब्बमुपकरणभूतं च कम्मनिमित्तं वा, अनन्तरमुप्पज्जमानभवे उपलभितब्बं उपभोगभूतं च गतिनिमित्तं वा कम्मबलेन छन्नं द्वारानं अञ्ञतरस्मिं पच्चुपट्ठाति ॥ ततो परं तमेव तथोपट्ठितं आरम्मणं आरब्भ विपच्चमानककम्मानुरूपं परिसुद्धमुपक्किलिट्ठं वा उपलभितब्बभवानुरूपं तत्थोणतं व चित्तसंतानं अभिण्हं पवत्तति बाहुल्लेन । तमेव वा पन जनकभूतं कम्मभिनवकरणवसेन द्वारप्पत्तं होति ।

३६. पच्चासन्नमरणस्स तस्स वीथिचित्तावसाने भवंगक्खये व चवनवसेन पच्चुप्पन्नभवपरियोसानभूतं चुतिचित्तमुप्पज्जित्वा निरुज्झति ॥ तस्मिं निरुद्धावसाने तस्सानन्तरमेव तथागहितं आरम्मणमारब्भ सवत्थुकं, अवत्थुकमेव वा यथारहं अविज्जानुसयपरिक्खित्तेन तण्हानुसयमूलकेन संखारेन जनीयमानं संपयुत्तेहि परिग्गय्हमानं सहजातानमधिट्ठानभावेन पुब्बंगमभूतं भवन्तरपटिसंधानवसेन पटिसंधिसंखातं मानसं उप्पज्जमानमेव पतिट्ठाति भवन्तरे ॥

३७. मरणासन्नवीथियं पनेत्थ मंदप्पवत्तानि पञ्चेव जवनानि पाटिकंखितब्बानि ॥ तस्मा यदा पच्चुप्पन्नारम्मणेसु आपाथमागतेसु धरन्तेस्वेव मरणं होति, तदा पटिसंधिभवंगानं पि पच्चुप्पन्नारम्मणता लब्भती ति कत्वा कामावचरपटिसंधिया छद्वारगहितं कम्मनिमित्तं, गतिनिमित्तं च पच्चुप्पन्नमतीतारम्मणं उपलब्भति । कम्मं पन अतीतमेव ॥ तं च मनोद्वारगहितं ॥ तानि पन सब्बानि पि परित्तधम्मभूतानेवारम्मणानि ॥

३८. रूपावचरपटिसंधिया पन पञ्ञत्तिभूतं कम्मनिमित्तमेवारम्मणं होति ॥ तथा आरुप्पपटिसंधिया च महग्गतभूतं पञ्ञत्तिभूतं च कम्मनिमित्तमेव यथारहं आरम्मणं होति ॥ असञ्ञसत्तानं जीवितनवकमेव पटिसंधिभावेन पतिट्ठाति ॥ तस्मा ते रूपपटिसंधिका नाम ॥ अरूपा अरूपपटिसंधिका ॥ सेसा रूपारूपपटिसंधिका ॥

३९. आरुप्पचुतिया होन्ति हेट्ठिमारुप्पवज्जिता ॥
परमारुप्पसंधी च तथा कामतिहेतुका ॥
रूपावचरचुतिया अहेतुरहिता सियुं ।
सब्बा कामतिहेतुम्हा कामेस्वेव पनेतरा ॥

अयमेत्थ चुतिपटिसंधिक्कमो ॥

४०. इच्चेवं गहितपटिसंधिकानं पन पटिसंधिनिरोधानन्तरतो पभुति तमेवारम्मणमारब्भ तदेव चित्तं याव चुतिचित्तुप्पादा असति वीथिचित्तुप्पादे भवस्स अंगभावेन भवंगसंततिसंखातं मानसं अब्बोच्छिन्नं नदीसोतो विय पवत्तति । परियोसाने च चवनवसेन चुतिचित्तं हुत्वा निरुज्झति ॥ ततो परं च पटिसंधादयो रथचक्कमिव यथाक्कमं एवमेव परिवत्तन्ता पवत्तन्ति ॥

४१. पटिसंधिभवंगवीथियो चुति चेह तथा भवन्तरे ।
पुन संधि भवंगमिच्चयं परिवत्तति चित्तसंतति ॥
पटिसंखाय पनेतमद्धुवं अधिगन्त्वा पदमच्चुतं बुधा ।
सुसमुच्छिन्नसिनेहबंधना सममेस्सन्ति चिराय सुब्बता ॥

इति अभिधम्मत्थसंगहे वीथिमुत्तकसंगहविभागो नाम
पञ्चमो परिच्छेदो ॥

६.

(रूपसंगहविभागो)

१. एत्तावता विभत्ता हि सप्पभेदप्पवत्तिका ।
चित्तचेतसिका धम्मा रूपं दानि पवुच्चति ॥

२. समुद्देसा विभागा च समुट्ठाना कलापतो ।
पवत्तिक्कमतो चेति पञ्चधा तस्स संगहो ॥

३. चत्तारि महाभूतानि चतुन्नं च महाभूतानं उपादाय रूपं ति दुविधं पेतं रूपं एकादसविधेन संगहं गच्छति ॥

४. कथं ? पठवीधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायोधातु, भूतरूपं नाम ॥ चक्खु, सोतं, घानं, जिव्हा, कायो, पसादरूपं नाम ॥ रूपं, सद्दो, गंधो, रसो, आपोधातुवज्जितं भूतत्तयसंखातं फोट्ठब्बं, गोचररूपं नाम ॥ इत्थत्तं, पुरिसत्तं, भावरूपं नाम ॥ हदयवत्थु हदयरूपं नाम ॥ जीवितिन्द्रियं जीवितरूपं नाम ॥ कबळीकारो आहारो आहाररूपं नाम ॥ इति च अट्ठारसविधं पेतं रूपं, सभावरूपं, सलक्खणरूपं, निप्फन्नरूपं, रूपरूपं सम्मसनरूपं ति च संगहं गच्छति ॥

५. आकासधातु परिच्छेदरूपं नाम ॥ कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति, विञ्ञत्तिरूपं नाम ॥ रूपस्स लहुता, मुदुता, कम्मञ्ञता, विञ्ञत्तिद्वयं विकाररूपं नाम ॥ रूपस्स उपचयो, संतति, जरता, अनिच्चता, लक्खणरूपं नाम ॥ जातिरूपमेव पनेत्थ उपचयसंततिनामेन पवुच्चती ति ॥ एकादसविधं पेतं रूपं अट्ठवीसतिविधं होति सरूपवसेन ॥

६. कथं ?

भूतप्पसादविसया भावो हदयमिच्चपि ।
जीविताहाररूपेहि अट्ठारसविधं तथा ॥
परिच्छेदो च विञ्ञत्ति विकारो लक्खणं ति च
अनिप्फन्ना दस चेति अट्ठवीसविधं भवे ॥

अयमेत्थ रूपसमुद्देसो ॥

७. सब्बं च पनेतं रूपं अहेतुकं, सप्पच्चयं, सासवं, संखतं, लोकियं, कामावचरं, अनारम्मणं, अप्पहातब्बमेवा ति एकविधं पि अज्झत्तिकबाहिरादिवसेन बहुधा भेदं गच्छति ॥

८. कथं ? पसादसंखातं पञ्चविधं पि अज्झत्तिकरूपं नाम । इतरं बाहिररूपं ॥ पसादहदयसंखातं छब्बिधं पि वत्थुरूपं नाम ।

इतरमवत्थुरूपं ॥ पसाद-विञ्ञत्तिसङ्खातं सत्तविधं पि द्वाररूपं नाम । इतरमद्वाररूपं ॥ पसाद-भाव-जीवितसङ्खातं अट्ठविधं पि इन्द्रियरूपं नाम । इतरमनिन्द्रियरूपं ॥ पसाद-विसयसङ्खातं द्वादसविधं पि ओळारिकरूपं, सन्तिकेरूपं, सप्पटिघरूपं च । इतरं सुखुमरूपं, दूरेरूपं, अप्पटिघरूपं च ॥ कम्मजं उपादिण्णरूपं । इतरं अनुपादिण्णरूपं ॥ रूपायतनं सनिदस्सनरूपं । इतरं अनिदस्सनरूपं ॥ चक्खादिद्वयं असम्पत्तवसेन, घानादित्तयं सम्पत्तवसेना ति पञ्चविधं पि गोचरग्गाहिकरूपं । इतरं अगोचरग्गाहिकरूपं ॥ वण्णो, गन्धो, रसो, ओजा, भूतचतुक्कं चेति अट्ठविधं पि अविनिब्भोगरूपं । इतरं विनिब्भोगरूपं ॥

९. इच्चेवमट्ठवीसतिविधं पि च विचक्खणा ।
अज्झत्तिकादिभेदेन विभजन्ति यथारहं ॥

अयमेत्थ रूपविभागो ॥

१०. कम्मं, चित्तं, उतु, आहारो चेति चत्तारि रूपसमुट्ठानानि नाम ॥

११. तत्थ कामावचरं रूपावचरं चेति पञ्चवीसतिविधं पि कुसलाकुसलकम्ममभिसंखतं अज्झत्तिकसंताने कम्मसमुट्ठानरूपं पटिसंधिमुपादाय खणे खणे समुट्ठापेति ॥

१२. अरूपविपाक-द्विपञ्चविञ्ञाणवज्जितं पञ्चसत्ततिविधं पि चित्तं चित्तसमुट्ठानरूपं पठमभवंगमुपादाय जायन्तमेव समुट्ठापेति ॥ तत्थ अप्पनाजवनं इरियापथं पि सन्नामेति ॥ वोट्ठब्बन-कामावचर-जवनाभिञ्ञा पन विञ्ञत्तिं पि समुट्ठापेन्ति ॥ सोमनस्सजवनानि पनेत्थ तेरस हसनं पि जनेन्ति ॥

१३. सीतुण्होतुसमञ्ञाता तेजोधातु ठितिप्पत्ता व उतुसमुट्ठानरूपं अज्झत्तं च बहिद्धा च यथारहं समुट्ठापेति ॥

३. चत्तारि महाभूतानि चतुन्नं च महाभूतानं उपादाय रूपं ति दुविधं पेतं रूपं एकादसविधेन संगहं गच्छति ॥

४. कथं ? पठवीधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायोधातु, भूतरूपं नाम ॥ चक्खु, सोतं, घानं, जिव्हा, कायो, पसादरूपं नाम ॥ रूपं, सद्दो, गंधो, रसो, आपोधातुवज्जितं भूतत्तयसंखातं फोट्ठब्बं, गोचररूपं नाम ॥ इत्थत्तं, पुरिसत्तं, भावरूपं नाम ॥ हदयवत्थु हदयरूपं नाम ॥ जीवितिन्द्रियं जीवितरूपं नाम ॥ कबळीकारो आहारो आहाररूपं नाम ॥ इति च अट्ठारसविधं पेतं रूपं, सभावरूपं, सलक्खणरूपं, निप्फन्नरूपं, रूपरूपं सम्मसनरूपं ति च संगहं गच्छति ॥

५. आकासधातु परिच्छेदरूपं नाम ॥ कायविञ्ञत्ति, वचीविञ्ञत्ति, विञ्ञत्तिरूपं नाम ॥ रूपस्स लहुता, मुदुता, कम्मञ्ञता, विञ्ञत्तिद्वयं विकाररूपं नाम ॥ रूपस्स उपचयो, संतति, जरता, अनिच्चता, लक्खणरूपं नाम ॥ जातिरूपमेव पनेत्थ उपचयसंतति-नामेन पवुच्चती ति ॥ एकादसविधं पेतं रूपं अट्ठवीसतिविधं होति सरूपवसेन ॥

६. कथं ?

भूतप्पसादविसया भावो हदयमिच्चपि ।
जीविताहाररूपेहि अट्ठारसविधं तथा ॥
परिच्छेदो च विञ्ञत्ति विकारो-लक्खणं ति च
अनिप्फन्ना दस चेति अट्ठवीसविधं भवे ॥

अयमेत्थ रूपसमुद्देसो ॥

७. सब्बं च पनेतं रूपं अहेतुकं, सप्पच्चयं, सासवं, संखतं, लोकियं, कामावचरं, अनारम्मणं, अप्पहातब्बमेवा ति एकविधं पि अज्झत्तिकबाहिरादिवसेन बहुधा भेदं गच्छति ॥

८ कथं ? पसादसंखातं पञ्चविधं पि अज्झत्तिकरूपं नाम । इतरं बाहिररूपं ॥ पसादहदयसंखातं छब्बिधं पि वत्थुरूपं नाम ।

इतरमवत्थुरूपं ॥ पसादविञ्ञत्तिसंखातं सत्तविधं पि द्वाररूपं नाम। इतरमद्वाररूपं ॥ पसाद-भाव-जीवितसंखातं अट्ठविधं पि इन्द्रियरूपं नाम। इतरमनिन्द्रियरूपं ॥ पसाद-विसयसंखातं द्वादसविधं पि ओळारिकरूपं, सन्तिकेरूपं, सप्पटिघरूपं च। इतरं सुखुमरूपं, दूरेरूपं, अप्पटिघरूपं च ॥ कम्मजं उपादिण्णरूपं। इतरं अनुपादिण्णरूपं ॥ रूपायतनं सनिदस्सनरूपं। इतरं अनिदस्सनरूपं ॥ चक्खादिद्वयं असम्पत्तवसेन, घानादित्तयं सम्पत्तवसेना ति पञ्चविधं पि गोचरग्गाहिकरूपं। इतरं अगोचरग्गाहिकरूपं ॥ वण्णो, गन्धो, रसो, ओजा, भूतचतुक्कं चेति अट्ठविधं पि अविनिब्भोगरूपं। इतरं विनिब्भोगरूपं ॥

९. इच्चेवमट्ठवीसतिविधं पि च विचक्खणा।
अज्झत्तिकादिभेदेन विभजन्ति यथारहं ॥

अयमेत्थ रूपविभागो ॥

१०. कम्मं, चित्तं, उतु, आहारो चेति चत्तारि रूपसमुट्ठानानि नाम ॥

११. तत्थ कामावचरं रूपावचरं चेति पञ्चवीसतिविधं पि कुसलाकुसलकम्ममभिसंखतं अज्झत्तिकसंताने कम्मसमुट्ठानरूपं पटिसंधिमुपादाय खणे खणे समुट्ठापेति ॥

१२. अरूपविपाक-द्विपञ्चविञ्ञाणवज्जितं पञ्चसत्ततिविधं पि चित्तं चित्तसमुट्ठानरूपं पठमभवंगमुपादाय जायन्तमेव समुट्ठापेति ॥ तत्थ अप्पनाजवनं इरियापथं पि सन्नामेति ॥ वोट्ठपन-कामावचर-जवनाभिञ्ञा पन विञ्ञत्तिं पि समुट्ठापेन्ति ॥ सोमनस्सजवनानि पनेत्थ तेरस हसनं पि जनेन्ति ॥

१३. सीतुण्होतुसमञ्ञाता तेजोधातु ठितिप्पत्ता व उतुसमुट्ठानरूपं अज्झत्तं च बहिद्धा च यथारहं समुट्ठापेति ॥

१४. ओजासंखातो आहारो आहारसमुट्ठानरूपं अज्झोहरणकाले ठानप्पत्तो व समुट्ठापेति ॥

१५. तत्थ हदय-इन्द्रियरूपानि कम्मजानेव ॥ विञ्ञत्तिद्वयं चित्तजमेव ॥ सद्दो चित्तोतुजो ॥ लहुतादित्तयं उतुचित्ताहारेहि संभोति ॥ अविनिब्भोगरूपानि चेव आकासधातु च चतूहि संभूतानि ॥ लक्खणरूपानि न कुतोचि जायन्ति ॥

१६. अट्ठारस पन्नरस तेरस द्वादसा ति च ।
कम्म-चित्तोतुकाहारजानि होन्ति यथाक्कमं ॥
जायमानादिरूपानं सभावत्ता हि केवलं ।
लक्खणानि न जायन्ति केहिची ति पकासितं ॥

अयमेत्थ रूपसमुट्ठाननयो ॥

१७. एकुप्पादा एकनिरोधा एकनिस्सया सहवुत्तिनो एकवीसति रूपकलापा नाम ॥

१८. तत्थ जीवितं, अविनिब्भोगरूपं च चक्खुना सह चक्खुदसकं ति पवुच्चति । तथा सोतादीहि सद्धिं सोतदसकं, घानदसकं, जिव्हादसकं, कायदसकं, इत्थिभावदसकं, पुम्भावदसकं, वत्थुदसकं, चेति यथाक्कमं योजेतब्बं ॥ अविनिब्भोगरूपमेव जीवितेन सह जीवितनवकं ति पवुच्चति ॥ इमे नव कम्मसमुट्ठानकलापा ॥

१९. अविनिब्भोगरूपं पन सुद्धट्ठकं ॥ तदेव कायविञ्ञत्तिया सह कायविञ्ञत्तिनवकं । वचीविञ्ञत्ति-सद्देहि च सह वचीविञ्ञत्तिदसकं । लहुतादीहि सद्धिं लहुतादेकादसकं । कायविञ्ञत्तिलहुतादिद्वादसकं वचीविञ्ञत्ति-सद्द-लहुतादितेरसकं चेति छ चित्तसमुट्ठानकलापा ॥

२०. सुद्धट्ठकं, सद्दनवकं, लहुतादेकादसकं, सद्दलहुतादिद्वादसकं चेति चत्तारो उतुसमुट्ठानकलापा ॥

२१. सुद्धट्ठकं, लहुतादेकादसकं चेति द्वे आहारसमुट्ठानकलापा ॥

२२. तत्थ सुद्धट्ठकं, सद्दनवकञ्चेति द्वे उतुसमुट्ठानकलापा बहिद्धापि लब्भन्ति । अवसेसा पन सब्बे पि अज्झत्तिकमेव ॥

२३. कम्मचित्तोतुकाहारसमुट्ठाना यथाक्कमं ।
नव छ चतुरो द्वे ति कलापा एकवीसति ॥
कलापानं परिच्छेदलक्खणत्ता विचक्खणा ।
न कलापङ्गमिच्चाहु आकासं लक्खणानि च ॥

अयमेत्थ कलापयोजना ॥

२४. सब्बानि पि पनेतानि रूपानि कामलोके यथारहं अनूनानि पवत्तियं उपलब्भन्ति ॥ पटिसन्धियं पन संसेदजानं चेव ओपपातिकानं च चक्खु-सोत-घान-जिव्हा-काय-भाव-वत्थुदसकसंखातानि सत्त दसकानि पातुभवन्ति उक्कट्ठवसेन । ओमकवसेन पन चक्खु-सोत-घान-भावदसकानि कदाचि पि न लब्भन्ति ॥ तस्मा तेसं वसेन कलापहानि वेदितब्बा ॥ गब्भसेय्यकसत्तानं पन काय-भाव-वत्थुदसक संखातानि तीणि दसकानि पातुभवन्ति ॥ तत्थापि भावदसकं कदाचि पि न लब्भति ॥ ततो परं पवत्तिकाले कमेन चक्खुदसकादीनि च पातुभवन्ति ॥

२५. इच्चेवं पटिसन्धिमुपादाय कम्मसमुट्ठाना, दुतियचित्तमुपादाय चित्तसमुट्ठाना, ठितिकालमुपादाय उतुसमुट्ठाना, ओजाफरणमुपादाय आहारसमुट्ठाना चेति चतुसमुट्ठानरूपकलापसन्तति कामलोके दीपजाला विय नदीसोतो विय च यावतायुकमब्बोच्छिन्ना पवत्तति ॥

२६. मरणकाले पन चुतिचित्तोपरि-सत्तरसमचित्तस्स ठितिकालमुपादाय कम्मजरूपानि न उप्पज्जन्ति । पुरेतरमुप्पन्नानि च कम्मजरूपानि चुतिचित्तसमकालमेव पवत्तित्वा निरुज्झन्ति ॥ ततो

१४. ओजासंखातो आहारो आहारसमुट्ठानरूपं अज्झोहरणकाले ठानप्पत्तो व समुट्ठापेति ॥

१५. तत्थ हदय-इन्द्रियरूपानि कम्मजानेव ॥ विञ्ञत्तिद्वयं चित्तजमेव ॥ सद्दो चित्तोतुजो ॥ लहुतादित्तयं उतुचित्ताहारेहि संभोति ॥ अविनिब्भोगरूपानि चेव आकासधातु च चतूहि संभूतानि ॥ लक्खणरूपानि न कुतोचि जायन्ति ॥

१६. अट्ठारस पन्नरस तेरस द्वादसा ति च ।
कम्म-चित्तोतुकाहारजानि होन्ति यथाक्कमं ॥
जायमानादिरूपानं सभावत्ता हि केवलं ।
लक्खणानि न जायन्ति केहिची ति पकासितं ॥

अयमेत्थ रूपसमुट्ठाननयो ॥

१७. एकुप्पादा एकनिरोधा एकनिस्सया सहवुत्तिनो एकवीसति रूपकलापा नाम ॥

१८. तत्थ जीवितं, अविनिब्भोगरूपं च चक्खुना सह चक्खुदसकं ति पवुच्चति । तथा सोतादीहि सद्धिं सोतदसकं, घानदसकं, जिव्हादसकं, कायदसकं, इत्थिभावदसकं, पुम्भावदसकं, वत्थुदसकं, चेति यथाक्कमं योजेतब्बं ॥ अविनिब्भोगरूपमेव जीवितेन सह जीवितनवकं ति पवुच्चति ॥ इमे नव कम्मसमुट्ठानकलापा ॥

१९. अविनिब्भोगरूपं पन सुद्धट्ठकं ॥ तदेव कायविञ्ञत्तिया सह कायविञ्ञत्तिनवकं । वचीविञ्ञत्ति-सद्देहि च सह वचीविञ्ञत्तिदसकं । लहुतादीहि सद्धिं लहुतादेकादसकं । कायविञ्ञत्ति-लहुतादिद्वादसकं वचीविञ्ञत्ति-सद्द-लहुतादितेरसकं चेति छ चित्तसमुट्ठानकलापा ॥

२०. सुद्धट्ठकं, सद्दनवकं, लहुतादेकादसकं, सद्दलहुतादिद्वादसकं चेति चत्तारो उतुसमुट्ठानकलापा ॥

२१. ओजट्ठमकं, लहुतादेकादसकं चेति द्वे आहारसमुट्ठानकलापा ॥

२२. तत्थ सुद्धट्ठकं, सद्दनवकं चेति द्वे उतुसमुट्ठानकलापा बहिद्धा पि लब्भन्ति । अवसेसा पन सब्बे पि अज्झत्तिकमेव ॥

२३. कम्मचित्तोतुकाहारसमुट्ठाना यथाक्कमं ।
नव छ चतुरो द्वे ति कलापा एकवीसति ॥
कलापानं परिच्छेदलक्खणत्ता विचक्खणा ।
न कलापङ्गमिच्चाहु आकासं लक्खणानि च ॥

अयमेत्थ कलापयोजना ॥

२४. सब्बानि पि पनेतानि रूपानि कामलोके यथारहं अनूनानि पवत्तियं उपलब्भन्ति ॥ पटिसन्धियं पन संसेदजानं चेव ओपपातिकानं च चक्खु-सोत-घान-जिव्हा-काय-भाव-वत्थुदसकसंखातानि सत्त दसकानि पातुभवन्ति उक्कट्ठवसेन । ओमकवसेन पन चक्खु-सोत-घान-भावदसकानि कदाचि पि न लब्भन्ति ॥ तस्मा तेसं वसेन कलापहानि वेदितब्बा ॥ गब्भसेय्यकसत्तानं पन काय-भाव-वत्थुदसक-संखातानि तीणि दसकानि पातुभवन्ति ॥ तत्थापि भावदसकं कदाचि पि न लब्भति ॥ ततो परं पवत्तिकाले कमेन चक्खुदसकादीनि च पातुभवन्ति ॥

२५. इच्चेवं पटिसन्धिमुपादाय कम्मसमुट्ठाना, दुतियचित्तमुपादाय चित्तसमुट्ठाना, ठितिकालमुपादाय उतुसमुट्ठाना, ओजाफरणमुपादाय आहारसमुट्ठाना चेति चतुसमुट्ठानरूपकलापसन्तति कामलोके दीपजाला विय नदीसोतो विय च यावतायुकमब्बोच्छिन्ना पवत्तति ॥

२६. मरणकाले पन चुतिचित्तोपरि-सत्तरसमचित्तस्स ठितिकालमुपादाय कम्मजरूपानि न उप्पज्जन्ति । पुरेतरमुप्पन्नानि च कम्मजरूपानि चुतिचित्तसमकालमेव पवत्तित्वा निरुज्झन्ति ॥ ततो

परं चित्तजाहारजरूपं च वोच्छिज्जति ॥ ततो परं उतुसमुट्ठानरूप-परंपरा याव मतकळेवरसंखाता पवत्तन्ति[1] ॥

२७. इच्चेवं मतसत्तानं पुनदेव भवन्तरे ।
पटिसंधिमुपादाय तथारूपं पवत्तति ॥

२८. रूपलोके पन घान-जिव्हा-काय-भावदसकानि चेव आहारजकलापानि च न लब्भन्ति ॥ तस्मा तेसं पटिसंधिकाले चक्खु-सोत-वत्थुवसेन तीणि दसकानि जीवितनवकं चेति चत्तारो कम्म-समुट्ठानकलापा पवत्तियं चित्तोतुसमुट्ठाना च लब्भन्ति ॥ असञ्ञ-सत्तानं पन चक्खु-सोत-वत्थु-सद्दानि पि न लब्भन्ति । तथा सब्बानि पि चित्तजरूपानि ॥ तस्मा तेसं पटिसंधिकाले जीवित-नवकमेव, पवत्तियं च सद्दवज्जितं उतुसमुट्ठानरूपं अतिरिच्छति ॥ इच्चेवं काम-रूपासञ्ञिसंखातेसु तीसु ठानेसु पटिसंधि-पवत्तिवसेन दुविधा रूपपवत्ति वेदितब्बा ॥

२९. अट्ठवीसति कामेसु होन्ति तेवीस रूपिसु ।
सत्तरसेवसञ्ञीनं अरूपे नत्थि किंचि पि ॥
सद्दो विकारो जरता मरणं चोपपत्तियं ।
न लब्भन्ति पवत्ते तु न किंचि पि न लब्भति ॥

अयमेत्थ रूपपवत्तिक्कमो ॥

३०. निब्बानं पन लोकुत्तरसंखातं चतुमग्गञाणेन सच्छिकातब्बं मग्गफलानमारम्मणभूतं वानसंखाताय तण्हाय निक्खन्तत्ता निब्बानं ति पवुच्चति ॥ तदेतं सभावतो एकविधं पि सउपादिसेसनिब्बान-धातु अनुपादिसेसनिब्बानधातु चेति दुविधं होति कारणपरिया-येन । तथा सुञ्ञतं, अनिमित्तं, अप्पणिहितं चेति तिविधं होति आकारभेदेन ॥

१ सी. उतुसमुट्ठानपरंपरा च मतकळेवरं ठपेत्वा पवत्तन्ति ।

११. पदमच्चुतमच्चन्तं असङ्खतमनुत्तरं ।
निब्बानमिति भासन्ति वानमुत्ता महेसयो ॥

१२. इति चित्तं चेतसिकं रूपं निब्बानमिच्चपि ।
परमत्थं पकासेन्ति चतुधा व तथागता ॥

इति अभिधम्मत्थसंगहे रूपसंगहविभागो नाम
छट्ठो परिच्छेदो ॥



७.

(समुच्चयसंगहविभागो)

१. द्वासत्ततिविधा वुत्ता वत्थुधम्मा सलक्खणा ।
तेसं दानि यथायोगं पवक्खामि समुच्चयं ॥

२. अकुसलसंगहो, मिस्सकसंगहो, बोधिपक्खियसंगहो, सब्बसंगहो चेति समुच्चयसंगहो चतुब्बिधो वेदितब्बो ॥

३. कथं ? अकुसलसंगहे ताव, चत्तारो आसवा । कामासवो, भवासवो, दिट्ठासवो, अविज्जासवो ॥

४. चत्तारो ओघा । कामोघो, भवोघो, दिट्ठोघो, अविज्जोघो ॥

५. चत्तारो योगा । कामयोगो, भवयोगो, दिट्ठियोगो अविज्जायोगो ॥

६. चत्तारो गन्था । अभिज्झा कायगन्थो, व्यापादो कायगन्थो, सीलब्बतपरामासो कायगन्थो, इदंसच्चाभिनिवेसो कायगन्थो ॥

७. चत्तारो उपादाना । कामुपादानं, दिट्ठुपादानं, सीलब्बतुपादानं, अत्तवादुपादानं ॥

८. छ नीवरणानि । कामच्छन्दनीवरणं, ब्यापादनीवरणं, थीनमिद्धनीवरणं, उद्धच्चकुक्कुच्चनीवरणं, विचिकिच्छानीवरणं, अविज्जानीवरणं ॥

९. सत्तानुसया । कामरागानुसयो, भवरागानुसयो, पटिघानुसयो, मानानुसयो, दिट्ठानुसयो, विचिकिच्छानुसयो, अविज्जानुसयो ॥

१०. दस संयोजनानि । कामरागसंयोजनं, रूपरागसंयोजनं, अरूपरागसंयोजनं, पटिघसंयोजनं, मानसंयोजनं, दिट्ठिसंयोजनं, सीलब्बतपरामाससंयोजनं, विचिकिच्छासंयोजनं, उद्धच्चसंयोजनं, अविज्जासंयोजनं, सुत्तन्ते ॥

११. अपरानि दस संयोजनानि । कामरागसंयोजनं, भवरागसंयोजनं, पटिघसंयोजनं, मानसंयोजनं, दिट्ठिसंयोजनं, सीलब्बतपरामाससंयोजनं, विचिकिच्छासंयोजनं, इस्सासंयोजनं, मच्छरियसंयोजनं, अविज्जासंयोजनं अभिधम्मे ॥

१२. दस किलेसा । लोभो, दोसो, मोहो, मानो, दिट्ठि, विचिकिच्छा, थीनं, उद्धच्चं, अहिरिकं, अनोत्तप्पं ॥

१३. आसवादिसु पनेत्थ काम-भवनामेन तब्बत्थुका तण्हा अधिप्पेता । सीलब्बतपरामासो, इदंसच्चाभिनिवेसो, अत्तवादो च तथापवत्तं दिट्ठिगतमेव पवुच्चति ॥

१४. आसवोघा च योगा च तयो गन्था च वत्थुतो ।
उपादाना दुवे वुत्ता अट्ठ नीवरणा सियुं ॥
छळेवानुसया होन्ति नव संयोजना मता ।
किलेसा दस वुत्तोयं नवधा पापसंगहो ॥

१५. मिस्सकसंगहे छ हेतू । लोभो, दोसो, मोहो । अलोभो, अदोसो, अमोहो ॥

१६. सत्त झानङ्गानि । वितक्को, विचारो, पीति, एकग्गता, सोमनस्सं, दोमनस्सं, उपेक्खा ॥

१७. द्वादस मग्गङ्गानि । सम्मादिट्ठि, सम्मासङ्कप्पो, सम्मावाचा, सम्माकम्मन्तो, सम्माआजीवो, सम्मावायामो, सम्मासति, सम्मासमाधि । मिच्छादिट्ठि, मिच्छासङ्कप्पो, मिच्छावायामो मिच्छासमाधि ॥

१८. बावीसतिन्द्रियानि । चक्खुन्द्रियं, सोतिन्द्रियं, घानिन्द्रियं, जिव्हिन्द्रियं, कायिन्द्रियं, इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं, मनिन्द्रियं, सुखिन्द्रियं, दुक्खिन्द्रियं, सोमनस्सिन्द्रियं दोमनस्सिन्द्रियं, उपेक्खिन्द्रियं, सद्धिन्द्रियं, विरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं, अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं, अञ्ञिन्द्रियं, अञ्ञाताविन्द्रियं ॥

१९. नव बलानि । सद्धाबलं, विरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं, हिरिबलं, ओत्तप्पबलं, अहिरिकबलं, अनोत्तप्पबलं ॥

२०. चत्तारो अधिपती । छन्दाधिपति, विरियाधिपति, चित्ताधिपति, वीमंसाधिपति ॥

२१. चत्तारो आहारा । कबळीकारो आहारो, फस्सो दुतियो, मनोसञ्चेतना ततिया, विञ्ञाणं चतुत्थं ॥

२२. इन्द्रियेसु पनेत्थ सोतापत्तिमग्गञाणं अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं । अरहत्तफलञाणं अञ्ञाताविन्द्रियं । मज्झे छ ञाणानि अञ्ञिन्द्रियानीति वुच्चन्ति ॥ जीवितिन्द्रियं च रूपारूपवसेन दुविधं होति ॥

२३. पञ्चविञ्ञाणेसु झानङ्गानि, अविरियेसु बलानि, अहेतुकेसु मग्गङ्गानि न लब्भन्ति ॥ तथा विचिकिच्छाचित्ते एकग्गता मग्गि-

८. छ नीवरणानि । कामच्छन्दनीवरणं, ब्यापादनीवरणं, थीनमिद्धनीवरणं, उद्धच्चकुक्कुच्चनीवरणं, विचिकिच्छानीवरणं, अविज्जानीवरणं ॥

९. सत्तानुसया । कामरागानुसयो, भवरागानुसयो, पटिघानुसयो, मानानुसयो, दिट्ठानुसयो, विचिकिच्छानुसयो, अविज्जानुसयो ॥

१०. दस संयोजनानि । कामरागसंयोजनं, रूपरागसंयोजनं, अरूपरागसंयोजनं, पटिघसंयोजनं, मानसंयोजनं, दिट्ठिसंयोजनं, सीलब्बतपरामाससंयोजनं, विचिकिच्छासंयोजनं, उद्धच्चसंयोजनं, अविज्जासंयोजनं, सुत्तन्ते ॥

११. अपरानि दस संा नि । कामरागसंयोजनं, भवरागसंयोजनं, पटिघसंयोजनं, मानसंयोजनं, दिट्ठिसंयोजनं, सीलब्बतपरामाससंयोजनं, विचिकिच्छासंयोजनं, इस्सासंयोजनं, मच्छरियसंयोजनं, अविज्जासंयोजनं अभिधम्मे ॥

१२. दस किलेसा । लोभो, दोसो, मोहो, मानो, दिट्ठि, विचिकिच्छा, थीनं, उद्धच्चं, अहिरिकं, अनोत्तप्पं ॥

१३. आसवादिसु पनेत्थ काम-भवनामेन तब्बत्थुका तण्हा अधिप्पेता । सीलब्बतपरामासो, इदंसच्चाभिनिवेसो, अत्तवादो च तथा पवत्तं दिट्ठिगतमेव पवुच्चति ॥

१४. आसवोघा च योगा च तयो गन्था च वत्थुतो ।
उपादाना दुवे वुत्ता अट्ठ नीवरणा सियुं ॥
छळेवानुसया होन्ति नव संयोजना मता ।
किलेसा दस वुत्तोयं नवधा पापसंगहो ॥

१५. मिस्सक संगहे छ हेतू । लोभो, दोसो, मोहो । अलोभो, अदोसो, अमोहो ॥

१६. सत्त झानङ्गानि । वितक्को, विचारो, पीति, एकग्गता, सोमनस्सं, दोमनस्सं, उपेक्खा ॥

१७. द्वादस मग्गङ्गानि । सम्मादिट्ठि, सम्मासङ्कप्पो, सम्मावाचा, सम्माकम्मन्तो, सम्माआजीवो, सम्मावायामो, सम्मासति, सम्मासमाधि । मिच्छादिट्ठि, मिच्छासङ्कप्पो, मिच्छावायामो मिच्छासमाधि ॥

१८. बावीसतिन्द्रियानि । चक्खुन्द्रियं, सोतिन्द्रियं, घानिन्द्रियं, जिव्हिन्द्रियं, कायिन्द्रियं, इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं, मनिन्द्रियं, सुखिन्द्रियं, दुक्खिन्द्रियं, सोमनस्सिन्द्रियं दोमनस्सिन्द्रियं, उपेक्खिन्द्रियं, सद्धिन्द्रियं, विरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं, अनञ्ञातञ्ञ मीतिन्द्रियं, अञ्ञिन्द्रियं, अञ्ञाताविन्द्रियं ॥

१९. नव बलानि । सद्धाबलं, विरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं, हिरिबलं, ओत्तप्पबलं, अहिरिकबलं, अनोत्तप्पबलं ॥

२०. चत्तारो अधिपती । छन्दाधिपति, विरियाधिपति, चित्ताधिपति, वीमंसाधिपति ॥

२१. चत्तारो आहारा । कबळीकारो आहारो, फस्सो दुतियो, मनोसंचेतना ततिया, विञ्ञाणं चतुत्थं ॥

२२. इन्द्रियेसु पनेत्थ सोतापत्तिमग्गञाणं अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं । अरहत्तफलञाणं अञ्ञाताविन्द्रियं । मज्झे छ ञाणानि अञ्ञिन्द्रियानी ति पवुच्चन्ति ॥ जीवितिन्द्रियं च रूपारूपवसेन दुविधं होति ॥

२३. पञ्चविञ्ञाणेसु झानङ्गानि, अविरियेसु बलानि, अहेतुकेसु मग्गङ्गानि न लब्भन्ति ॥ तथा विचिकिच्छाचित्ते एकग्गता मग्ग-

न्द्रियबलभावं न गच्छति । द्विहेतुक-तिहेतुकजवनेस्वेव यथासम्भवं अधिपति एकोव लब्भति ॥

२४. छ हेतू पञ्च झानंगा मग्गंगा नव वत्थुतो ।
सोळसिन्द्रियधम्मा च बलधम्मा नवेरिता ॥
चत्तारोधिपती वुत्ता तथाहारा ति सत्तधा ।
कुसलादिसमाकिण्णो वुत्तो मिस्सकसंगहो ॥

२५. बोधिपक्खियसंगहे चत्तारो सतिपट्ठाना । कायानुपस्सना-सतिपट्ठानं, वेदनानुपस्सनासतिपट्ठानं, चित्तानुपस्सनासतिपट्ठानं, धम्मानुपस्सनासतिपट्ठानं ॥

२६. चत्तारो सम्मप्पधाना । उप्पन्नानं पापकानं धम्मानं पहानाय वायामो, अनुप्पन्नानं पापकानं धम्मानं अनुप्पादाय वायामो, अनुप्पन्नानं कुसलानं धम्मानं उप्पादाय वायामो, उप्पन्नानं कुसलानं धम्मानं भिय्योभावाय वायामो ॥

२७. चत्तारो इद्धिपादा । छन्दिद्धिपादो, विरियिद्धिपादो, चित्तिद्धिपादो, वीमंसिद्धिपादो ॥

२८. पञ्चिन्द्रियानि । सद्धिन्द्रियं, विरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं ।

२९. पञ्च बलानि । सद्धाबलं, विरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं ॥

३०. सत्त बोज्झंगा । सतिसंबोज्झंगो, धम्मविचयसंबोज्झंगो, विरियसंबोज्झंगो, पीतिसंबोज्झंगो, पस्सद्धिसंबोज्झंगो, समाधिसंबोज्झंगो, उपेक्खासंबोज्झंगो ॥

३१. अट्ठ मग्गंगानि । सम्मादिट्ठि, सम्मासंकप्पो, सम्मावाचा, सम्माकम्मन्तो, सम्माआजीवो, सम्मावायामो, सम्मासति, सम्मासमाधि ॥

१२. एत्थ पन चत्तारो सतिपट्ठाना ति सम्मासति एका व पवुच्चति । तथा चत्तारो सम्मप्पधाना ति च सम्मावायामो ॥

१३. छन्दो चित्तमुपेक्खा च सद्धापस्सद्धिपीतियो ।
सम्मादिट्ठि च संकप्पो वायामो विरतित्तयं ॥
सम्मासति समाधी ति चुद्दसेते सभावतो ।
सत्ततिंसप्पभेदेन सत्तधा तत्थ संगहो ॥

१४. संकप्पपस्सद्धि च पीतुपेक्खा
छन्दो च चित्तं विरतित्तयं च ।
नवेकठाना विरियं नवट्ठ
सती समाधी चतु पञ्च पञ्ञा ।
सद्धा दुठानुत्तमसत्ततिंस-
धम्मानमेसो पवरो विभागो ॥

१५. सब्बे लोकुत्तरे होन्ति न वा संकप्पपीतियो ।
लोकिये पि यथायोगं छब्बिसुद्धिप्पवत्तियं ॥

१६. सब्बसंगहे पञ्चक्खन्धा । रूपक्खन्धो, वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, संखारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो ॥

१७. पञ्चुपादानक्खन्धा । रूपुपादानक्खन्धो, वेदनुपादानक्खन्धो, सञ्ञुपादानक्खन्धो, संखारुपादानक्खन्धो, विञ्ञाणुपादानक्खन्धो ॥

१८. द्वादसायतनानि । चक्खायतनं, सोतायतनं, घानायतनं, जिव्हायतनं, कायायतनं, मनायतनं । रूपायतनं, सद्दायतनं, गन्धायतनं, रसायतनं, फोट्ठब्बायतनं, धम्मायतनं ॥

१९. अट्ठारस धातुयो । चक्खुधातु, सोतधातु, घानधातु, जिव्हाधातु, कायधातु । रूपधातु, सद्दधातु, गन्धधातु, रसधातु, फोट्ठब्बधातु । चक्खुविञ्ञाणधातु, सोतविञ्ञाणधातु, घानविञ्ञाणधातु,

जिव्हाविञ्ञाणधातु, कायविञ्ञाणधातु। मनोधातु, धम्मधातु, मनोविञ्ञाणधातु ॥

४० चत्तारि अरियसच्चानि। दुक्खं अरियसच्चं, दुक्खसमुदयं अरियसच्चं, दुक्खनिरोधं अरियसच्चं, दुक्खनिरोधगामिनीपटिपदा अरियसच्चं ॥

४१. एत्थ पन चेतसिक-सुखुमरूप-निब्बानवसेन एकूनसत्तति धम्मा धम्मायतनं धम्मधातू ति च संखं गच्छन्ति ॥ मनायतनमेव सत्तविञ्ञाणधातुवसेन भिज्जति ॥

४२. रूपं च वेदना सञ्ञा सेसा चेतसिका तथा।
विञ्ञाणमिति पञ्चेते पञ्चक्खन्धा ति भासिता ॥
पञ्चुपादानक्खन्धा ति तथा तेभूमका मता।
भेदाभावेन निब्बानं खन्धसंगहनिस्सटं ॥
द्वारालंबनभेदेन भवन्तायतनानि च।
द्वारालंबतदुप्पन्नपरियायेन धातुयो ॥

४३. दुक्खं तेभूमकं वट्टं तण्हा समुदयो भवे।
निरोधो नाम निब्बानं मग्गो लोकुत्तरो मतो ॥
मग्गयुत्ता फला चेव चतुसच्चविनिस्सटा।
इति पञ्चप्पभेदेन पवुत्तो सब्बसंगहो ॥

इति अभिधम्मत्थसंगहे समुच्चयसंगहविभागो नाम
सत्तमो परिच्छेदो ॥

८.

(पच्चयसंगहविभागो)

१. येसं संखतधम्मानं ये धम्मा पच्चया यथा।
तं विभागमिहेदानि पवक्खामि यथारहं ॥

२. पटिच्चसमुप्पादनयो, पट्ठाननयो चेति पच्चयसंगहो दुविधो वेदितब्बो ॥

३. तत्थ तब्भावभाविभावाकारमत्तोपलक्खितो पटिच्चसमुप्पादनयो ॥ पट्ठाननयो पन आहच्च पच्चयट्ठितिमारब्भ पवुच्चति ॥ उभयं पन वोमिस्सित्वा पपञ्चेन्ति आचरिया ॥

४. तत्थ अविज्जापच्चया संखारा। संखारपच्चया विञ्ञाणं। विञ्ञाणपच्चया नामरूपं। नामरूपपच्चया सळायतनं। सळायतनपच्चया फस्सो। फस्सपच्चया वेदना। वेदनापच्चया तण्हा। तण्हापच्चया उपादानं। उपादानपच्चया भवो। भवपच्चया जाति। जातिपच्चया जरामरण-सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासा सम्भवन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होती ति ॥ अयमेत्थ पटिच्चसमुप्पादनयो ॥

५. तत्थ तयो अद्धा, द्वादसंगानि, वीसताकारा, तिसंधि, चतुसंखेपा, तीणि वट्टानि, द्वे मूलानि च वेदितब्बानि ॥

६. कथं ? अविज्जासंखारा अतीतो अद्धा। जातिजरामरणं अनागतो अद्धा। मज्झे अट्ठ पच्चुप्पन्नो अद्धा ति तयो अद्धा ॥

७. अविज्जा, संखारा, विञ्ञाणं, नामरूपं, सळायतनं, फस्सो, वेदना, तण्हा, उपादानं, भवो, जाति, जरामरणं ति द्वादसंगानि ॥ सोकादिवचनं पनेत्थ निस्सन्दफलनिदस्सनं ॥

८. अविज्जासंखारग्गहणेन पनेत्थ तण्हूपादानभवा पि गहिता भवन्ति । तथा तण्हूपादानभवग्गहणेन च अविज्जासंखारा । जातिजरामरणग्गहणेन च विञ्ञाणादिफलपञ्चकमेव गहितं ति कत्वा—

अतीते हेतवो पञ्च इदानि फलपञ्चकं ।
इदानि हेतवो पञ्च आयतिं फलपञ्चकं ति ॥

वीसताकारा, तिसंधि, चतुसंखेपा च भवन्ति ॥

९. अविज्जातण्हूपादाना च किलेसवट्टं । कम्मभवसंखातो भवेकदेसो संखारा च कम्मवट्टं । उपपत्तिभवसंखातो भवेकदेसो अवसेसा च विपाकवट्टं ति तीणि वट्टानि ॥ अविज्जातण्हावसेन द्वे मूलानि च वेदितब्बानि ॥

१०. तेसमेव च मूलानं निरोधेन निरुज्झति ।
जरामरणमुच्छाय पीळितानं अभिण्हसो ॥
आसवानं समुप्पादा अविज्जा च पवत्तति ।
वट्टमाबन्धमिच्चेवं तेभूमकमनादिकं ।
पटिच्चसमुप्पादो ति पट्ठपेसि महामुनि ॥

११. हेतुपच्चयो, आरम्मणपच्चयो, अधिपतिपच्चयो, अनन्तरपच्चयो, समनन्तरपच्चयो, सहजातपच्चयो, अञ्ञमञ्ञपच्चयो, निस्सयपच्चयो, उपनिस्सयपच्चयो, पुरेजातपच्चयो, पच्छाजातपच्चयो, आसेवनपच्चयो, कम्मपच्चयो, विपाकपच्चयो, आहारपच्चयो, इन्द्रियपच्चयो, झानपच्चयो, मग्गपच्चयो, संपयुत्तपच्चयो, विप्पयुत्तपच्चयो, अत्थिपच्चयो, नत्थिपच्चयो, विगतपच्चयो, अविगतपच्चयो ति ॥ अयमेत्थ पट्ठाननयो ॥

१२. छद्धा नामं तु नामस्स पञ्चधा नामरूपिनं ।
एकधा पुन रूपस्स रूपं नामस्स चेकधा ॥

१ सी. पवड्ढति ॥

पञ्ञत्तिनामरूपानि नामस्स दुविधा द्वयं ।
द्वयस्स नवधा चेति छब्बिधा पच्चया कथं ॥

१३. अनन्तरनिरुद्धा चित्तचेतसिका धम्मा पच्चुप्पन्नानं चित्तचेतसिकानं धम्मानं अनन्तर-समनन्तर-नत्थि-विगतवसेन, पुरिमानि जवनानि पच्छिमानं जवनानं आसेवनवसेन, सहजाता चित्तचेतसिका धम्मा अञ्ञमञ्ञं संपयुत्तवसेनेति च छद्धा नामं नामस्स पच्चयो होति ॥

१४. हेतुज्झानंगमग्गंगानि सहजातानं नामरूपानं हेतादिवसेन । सहजाता चेतना सहजातानं नामरूपानं, नानाक्खणिका चेतना कम्माभिनिब्बत्तानं नामरूपानं कम्मवसेन । विपाकक्खन्धा अञ्ञमञ्ञं, सहजातानं रूपानं विपाकवसेनेति च पञ्चधा नामं नामरूपानं पच्चयो होति ॥

१५. पच्छाजाता चित्तचेतसिका धम्मा पुरेजातस्स इमस्स कायस्स पच्छाजातवसेनेति एकधा व नामं रूपस्स पच्चयो होति ॥

१६. छ वत्थूनि पवत्तियं सत्तन्नं विञ्ञाणधातूनं, पञ्चारम्मणानि च पञ्चविञ्ञाणवीथिया पुरेजातवसेनेति एकधा व रूपं नामस्स पच्चयो होति ॥

१७. आरम्मणवसेन उपनिस्सयवसेनेति द्विधा पञ्ञत्तिनामरूपानि नामस्सेव पच्चया होन्ति ॥ तत्थ रूपादिवसेन छब्बिधं होति आरम्मणं ॥

१८. उपनिस्सयो पन तिविधो होति । आरम्मणूपनिस्सयो, अनन्तरूपनिस्सयो, पकतूपनिस्सयो चेति ॥

१९. तत्थ आरम्मणमेव गरुकतं आरम्मणूपनिस्सयो ॥ अनन्तरनिरुद्धा चित्तचेतसिका धम्मा अनन्तरूपनिस्सया ॥ रागादयो

पन धम्मा, सद्धादयो च; सुखं, दुक्खं, पुग्गलो, भोजनं, उतु, सेनासनं च यथारहं अज्झत्तं च बहिद्धा च कुसलादिधम्मानं, कम्मं विपाकानं ति च बहुधा होति पकतूपनिस्सयो ॥

२०. अधिपति-सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सयाहारिन्द्रिय-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतवसेनेति यथारहं नवधा नामरूपानि नामरूपानं पच्चया भवन्ति ॥

२१. तत्थ गरुकतमारम्मणं आरम्मणाधिपतिवसेन नामानं, सहजाताधिपति चतुब्बिधो पि सहजातवसेन सहजातानं नामरूपानं ति च दुविधो होति अधिपतिपच्चयो ॥

२२. चित्तचेतसिका धम्मा अञ्ञमञ्ञं सहजातरूपानं च, महाभूता अञ्ञमञ्ञं उपादारूपानं च, पटिसंधिक्खणे वत्थु-विपाका अञ्ञमञ्ञं ति च तिविधो होति सहजातपच्चयो ॥

२३. चित्तचेतसिका धम्मा अञ्ञमञ्ञं, महाभूता अञ्ञमञ्ञं, पटिसंधिक्खणे वत्थु-विपाका अञ्ञमञ्ञं ति च तिविधो होति अञ्ञमञ्ञपच्चयो ॥

२४. चित्तचेतसिका धम्मा अञ्ञमञ्ञं सहजातरूपानं च, महाभूता अञ्ञमञ्ञं उपादारूपानं च, छ वत्थूनि सत्तन्नं विञ्ञाणधातूनं ति च तिविधो होति निस्सयपच्चयो ॥

२५. कबळीकारो आहारो इमस्स कायस्स, अरूपिनो आहारा सहजातानं नामरूपानं ति च दुविधो होति आहारपच्चयो ॥

२६. पञ्च पसादा पञ्चन्नं विञ्ञाणानं, रूपजीवितिन्द्रियं उपादिण्णरूपानं, अरूपिनो इन्द्रिया सहजातानं नामरूपानं ति च तिविधो होति इन्द्रियपच्चयो ॥

२७. ओक्कन्तिक्खणे वत्थु विपाकानं, चित्तचेतसिका धम्मा सह-

जातरूपानं सहजातवसेन। पच्छाजाता चित्तचेतसिका धम्मा पुरेजातस्स इमस्स कायस्स पच्छाजातवसेन । छ वत्थूनि पवत्तियं सत्तन्नं विञ्ञाणधातूनं पुरेजातवसेनेति च तिविधो होति विप्पयुत्तपच्चयो ॥

२८. सहजातं पुरेजातं पच्छाजातं च सब्बथा ।
कबळीकारो आहारो रूपजीवितमिच्चयं ति ॥

पञ्चविधो होति अत्थिपच्चयो, अविगतपच्चयो च ॥

२९. आरम्मणूपनिस्सय-कम्मत्थिपच्चयेसु च सब्बे पि पच्चया समोधानं गच्छन्ति ॥

३०. सहजातरूपं ति पनेत्थ सब्बथा पि पवत्ते चित्तसमुट्ठानानं, पटिसंधियं कटत्तारूपानं च वसेन दुविधं होती ति वेदितब्बं ॥

३१. इति तेकालिका धम्मा कालमुत्ता च संभवा ।
अज्झत्तं च बहिद्धा च संखतासंखता तथा ॥
पञ्ञत्तिनामरूपानं वसेन तिविधा ठिता ।
पच्चया नाम पट्ठाने चतुवीसति सब्बथा ॥

३२. तत्थ रूपधम्मा रूपक्खन्धो व ॥ चित्तचेतसिकसंखाता चत्तारो अरूपिनो खन्धा, निब्बानं चेति पञ्चविधं पि अरूपं ति च नामं ति च पवुच्चति ॥ ततो अवसेसा पञ्ञत्ति पन पञ्ञापियत्ता पञ्ञत्ति, पञ्ञापनतो पञ्ञत्ती ति च दुविधा होति ॥

३३. कथं ? तंतंभूतविपरिणामाकारमुपादाय तथा तथा पञ्ञत्ता भूमिपब्बतादिका, संभारसंनिवेसाकारमुपादाय गेहरथसकटादिका, खन्धपञ्चकमुपादाय पुरिसपुग्गलादिका, चन्दवत्तनादिकमुपादाय दिसाकालादिका, असंफुट्ठाकारमुपादाय कूपगुहादिका, तंतंभूतनिमित्तं भावनाविसेसं च उपादाय कसिणनिमित्तादिका चेति एवमादिप्पभेदा पन परमत्थतो अविज्जमाना पि अत्थच्छायाकारेन चित्तु-

प्पादानमारम्मणभूता तं तं उपादाय उपनिधाय कारणं कत्वा तथा तथा परिकप्पियमाना संखायति समञ्ञायति वोहरियति पञ्ञापियती ति पञ्ञत्ती ति पवुच्चति ॥ अयं पञ्ञत्ति पञ्ञापियत्ता पञ्ञत्ति नाम ॥

३४. पञ्ञापनतो पञ्ञत्ति पन नाम-नामकम्मादिनामेन परिदीपिता ॥ सा विज्जमानपञ्ञत्ति, अविज्जमानपञ्ञत्ति, विज्जमानेन अविज्जमानपञ्ञत्ति, अविज्जमानेन विज्जमानपञ्ञत्ति, विज्जमानेन विज्जमानपञ्ञत्ति, अविज्जमानेन अविज्जमानपञ्ञत्ति चेति छब्बिधा होति ॥

३५. तत्थ यदा पन परमत्थतो विज्जमानं रूपवेदनादिं एताय पञ्ञापेन्ति, तदायं विज्जमानपञ्ञत्ति ॥ यदा पन परमत्थतो अविज्जमानं भूमिपब्बतादिं एताय पञ्ञापेन्ति, तदायं अविज्जमानपञ्ञत्ती ति पवुच्चति ॥ उभिन्नं पन वोमिस्सकवसेन सेसा यथाक्कमं छळभिञ्ञो, इत्थिसद्दो, चक्खुविञ्ञाणं, राजपुत्तो ति च वेदितब्बा ॥

३६. वचीघोसानुसारेन सोतविञ्ञाणवीथिया ।
पवत्तानन्तरुप्पन्नमनोद्वारस्स गोचरा ॥
अत्था यस्सानुसारेन विञ्ञायन्ति ततो परं ।
सायं पञ्ञत्ति विञ्ञेय्या लोकसंकेतनिम्मिता ॥

इति अभिधम्मत्थसंगहे पच्चयसंगहविभागो नाम
अट्ठमो परिच्छेदो ॥

---

१ सी. तंतंपरिणामसंनिवेसादिआकारमुपादाय ॥

१.

(कम्मट्ठानसंगहविभागो)

१. समथविपस्सनानं भावनानमितो परं।
कम्मट्ठानं पवक्खामि दुविधं पि यथाक्कमं॥

२. तत्थ समथसंगहे ताव, दस कसिणानि। दस असुभा दस अनुस्सतियो। चतस्सो अप्पमञ्ञायो। एका सञ्ञा। एक ववत्थानं। चत्तारो आरुप्पा चेति सत्तविधेन समथकम्मट्ठानसंगहो॥

३. रागचरिता, दोसचरिता, मोहचरिता, सद्धाचरिता, बुद्धिचरिता, वितक्कचरिता चेति छब्बिधेन चरितसंगहो॥

४. परिकम्मभावना, उपचारभावना, अप्पनाभावना चेति तिस्सो भावना॥

५. परिकम्मनिमित्तं, उग्गहनिमित्तं, पटिभागनिमित्तं चेति तीणि निमित्तानि च वेदितब्बानि॥

६. कथं? पठवीकसिणं, आपोकसिणं, तेजोकसिणं, वायोकसिणं, नीलकसिणं, पीतकसिणं, लोहितकसिणं, ओदातकसिणं, आकासकसिणं, आलोककसिणं चेति इमानि दस कसिणानि नाम॥

७. उद्धुमातकं, विनीलकं, विपुब्बकं, विच्छिद्दकं, विक्खायितकं, विक्खित्तकं, हतविक्खित्तकं, लोहितकं, पुळवकं, अट्ठिकं चेति इमे दस असुभा नाम॥

८. बुद्धानुस्सति, धम्मानुस्सति, संघानुस्सति, सीलानुस्सति, चागानुस्सति, देवतानुस्सति, उपसमानुस्सति, मरणानुस्सति, कायगतासति, आनापानस्सति चेति इमा दस अनुस्सतियो नाम॥

९. मेत्ता, करुणा, मुदिता, उपेक्खा चेति इमा चतस्सो अप्पमञ्ञायो नाम । ब्रह्मविहारा ति पि वुच्चन्ति ॥

१०. आहारे पटिकूलसञ्ञा एका सञ्ञा नाम ॥ चतुधातुववत्थानं एकं ववत्थानं नाम ॥

११. आकासानञ्चायतनादयो चत्तारो आरुप्पा नामा ति सब्बथा पि समथनिद्देसे चत्तालीस कम्मट्ठानानि भवन्ति ॥

१२. चरितासु पन दस असुभा, कायगतासतिसंखाता कोट्ठासभावना रागचरितस्स सप्पाया ॥ चतस्सो अप्पमञ्ञायो, नीलादीनि च चत्तारि कसिणानि दोसचरितस्स । आनापानं मोहचरितस्स, वितक्कचरितस्स च । बुद्धानुस्सतिआदयो छ सद्धाचरितस्स । मरण-उपसम-सञ्ञा-ववत्थानानि बुद्धिचरितस्स ॥ सेसानि पन सब्बानि पि कम्मट्ठानानि सब्बेसं पि सप्पायानि ॥ तत्थापि कसिणेसु पुथुलं मोहचरितस्स । खुद्दकं वितक्कचरितस्सेवा ति ॥ अयमेत्थ सप्पायभेदो ॥

१३. भावनासु पन सब्बत्थापि परिकम्मभावना लब्भतेव ॥ बुद्धानुस्सति आदिसु अट्ठसु, सञ्ञा-ववत्थानेसु चा ति दससु कम्मट्ठानेसु उपचारभावना व संपज्जति । नत्थि अप्पना ॥ सेसेसु पन समतिंसकम्मट्ठानेसु अप्पनाभावना पि संपज्जति ॥

१४. तत्थापि दस कसिणानि, आनापानं च पञ्चकज्झानिकानि । दस असुभा, कायगतासति च पठमज्झानिका । मेत्तादयो तयो चतुक्कज्झानिका ॥ उपेक्खा पञ्चमज्झानिका ति छब्बीसति रूपावचरज्झानिकानि कम्मट्ठानानि । चत्तारो पन आरुप्पा आरुप्पज्झानिका ति ॥ अयमेत्थ भावनाभेदो ॥

१५. निमित्तेसु पन परिकम्मनिमित्तं, उग्गहनिमित्तं च सब्बत्था पि यथारहं परियायेन लब्भन्तेव ॥ पटिभागनिमित्तं पन कसिणा-

कोट्ठास-आनापानेस्वेव लब्भति ॥ तत्थ हि पटिभागनिमित्त-मारब्भ उपचारसमाधि, अप्पनासमाधि च पवत्तन्ति ॥

१६. कथं ? आदिकम्मिकस्स हि पठवीमण्डलादिसु निमित्तं उग्गण्हन्तस्स तमारम्मणं परिकम्मनिमित्तं ति पवुच्चति ॥ सा च भावना परिकम्मभावना नाम ॥

१७. यदा पन तं निमित्तं चित्तेन समुग्गहितं होति, चक्खुना पस्सन्तस्सेव मनोद्वारस्स आपाथमागतं, तदा तमेव आरम्मणं उग्गहनिमित्तं नाम ॥ सा च भावना समाधियति ॥

१८. तथा समाहितस्स पनेतस्स ततो परं तस्मिं उग्गहनिमित्ते परिकम्मसमाधिना भावनमनुयुञ्जन्तस्स यदा तप्पटिभागं वत्थुधम्म-विमुच्चितं पञ्ञत्तिसङ्खातं भावनामयमारम्मणं चित्ते सन्निसिन्नं समप्पितं होति, तदा तं पटिभागनिमित्तं समुप्पन्नं ति पवुच्चति ॥ ततो पट्ठाय परिबन्धविप्पहीना कामावचरसमाधिसङ्खाता उपचार-भावना निप्फन्ना नाम होति ॥

१९. ततो परं तमेव पटिभागनिमित्तं उपचारसमाधिना समा-सेवन्तस्स रूपावचरपठमज्झानमप्पेति ॥ ततो परं तमेव पठमज्झानं, आवज्जनं, समापज्जनं, अधिट्ठानं, वुट्ठानं, पच्चवेक्खणा चेति इमाहि पञ्चहि वसिताहि वसीभूतं कत्वा वितक्कादिकमोळारिकङ्गं पहानाय, विचारादिसुखुमङ्गुप्पत्तिया पदहतो यथाक्कमं दुतियज्झानादयो यथा-रहमप्पेन्ति ॥

२०. इच्चेवं पठवीकसिणादिसु द्वावीसकम्मट्ठानेसु पटिभागनिमि-त्तमुपलब्भति ॥ अवसेसेसु पन अप्पमञ्ञा सत्तपञ्ञत्तियं पवत्तन्ति ॥

२१. आकासवज्जितकसिणेसु पन यं किञ्चि कसिणं उग्घाटेत्वा लद्धमाकासं अनन्तवसेन परिकम्मं करोन्तस्स पठमारुप्पमप्पेति ॥

तमेव पठमारुप्पविञ्ञाणं अनन्तवसेन परिकम्मं करोन्तस्स दुतिया रुप्पमप्पेति ॥ तमेव पठमारुप्पविञ्ञाणाभावं पन नत्थि किंची ति परिकम्मं करोन्तस्स ततियारुप्पमप्पेति ॥ ततियारुप्पं सन्तमेतं पणीतमेतं ति परिकम्मं करोन्तस्स चतुत्थारुप्पमप्पेति ॥

२२. अवसेसेसु च दससु कम्मट्ठानेसु बुद्धगुणादिकमारम्मणं आरब्भ परिकम्मं कत्वा तस्मिं निमित्ते साधुकमुग्गहिते तत्थेव परिकम्मं च समाधियति, उपचारो च संपज्जति ॥

२३. अभिञ्ञावसेन पवत्तमानं पन रूपावचरपञ्चमज्झानं अभिञ्ञापादकपञ्चमज्झाना वुट्ठहित्वा अधिट्ठेय्यादिकमावज्जेत्वा परिकम्मं करोन्तस्स रूपादिसु आरम्मणेसु यथारहमप्पेति ॥

२४. अभिञ्ञा च नाम–

इद्धिविधं दिब्बसोतं परचित्तविजानना ।
पुब्बेनिवासानुस्सति दिब्बचक्खू ति पञ्चधा ॥

अयमेत्थ गोचरभेदो ॥ निट्ठितो च समथकम्मट्ठाननयो ॥

२५. विपस्सनाकम्मट्ठाने पन सीलविसुद्धि, चित्तविसुद्धि, दिट्ठिविसुद्धि, कंखावितरणविसुद्धि, मग्गामग्गञाणदस्सनविसुद्धि, पटिपदाञाणदस्सनविसुद्धि, ञाणदस्सनविसुद्धि चेति सत्तविधेन विसुद्धिसंगहो ॥

२६. अनिच्चलक्खणं, दुक्खलक्खणं, अनत्तलक्खणं चेति तीणि लक्खणानि ॥

२७. अनिच्चानुपस्सना, दुक्खानुपस्सना, अनत्तानुपस्सना चेति तिस्सो अनुपस्सना ॥

२८. सम्मसनञाणं, उदयब्बयञाणं, भंगञाणं, भयञाणं, आदीनवञाणं, निब्बिदाञाणं, मुञ्चितुकम्यताञाणं, पटिसंखाञाणं,

सङ्खारुपेक्खाञाणं, अनुलोमञाणं चेति दस विपस्सनाञाणानि ॥

९. सुञ्ञतो विमोक्खो, अनिमित्तो विमोक्खो, अप्पणिहितो विमोक्खो चेति तयो विमोक्खा ॥ सुञ्ञतानुपस्सना, अनिमित्तानुपस्सना, अप्पणिहितानुपस्सना चेति तीणि विमोक्खमुखानि च वेदितब्बानि ॥

१०. कथं ? पातिमोक्खसंवरसीलं, इन्द्रियसंवरसीलं, आजीवपारिसुद्धिसीलं, पच्चयसन्निस्सितसीलं चेति चतुपारिसुद्धिसीलं सीलविसुद्धि नाम ॥

११. उपचारसमाधि अप्पनासमाधि चेति दुविधो पि समाधि चित्तविसुद्धि नाम ॥

१२. लक्खण-रस-पच्चुपट्ठान-पदट्ठानवसेन नामरूपपरिग्गहो दिट्ठिविसुद्धि नाम ॥

१३. तेसमेव च नामरूपानं पच्चयपरिग्गहो कङ्खावितरणविसुद्धि नाम ॥

१४. ततो परं पन तथापरिग्गहितेसु सप्पच्चयेसु तेभूमकसङ्खारेसु अतीतादिभेदभिन्नेसु खन्धादिनयमारब्भ कलापवसेन सङ्खिपित्वा, अनिच्चं खयट्ठेन, दुक्खं भयट्ठेन, अनत्ता असारकट्ठेना ति अद्धानवसेन, सन्ततिवसेन, खणवसेन वा सम्मसनञाणेन लक्खणत्तयं सम्मसन्तस्स, तेस्वेव पच्चयवसेन खणवसेन च उदयब्बयञाणेन उदयब्बयं समनुपस्सन्तस्स च–

ओभासो पीति पस्सद्धि अधिमोक्खो च पग्गहो ।
सुखं ञाणमुपट्ठानमुपेक्खा च निकन्ति चेति ॥

ओभासादिविपस्सनुपक्किलेसपरिपन्थपरिग्गहवसेन मग्गामग्गलक्ख
णववत्थानं मग्गामग्गञाणदस्सनविसुद्धि नाम ॥

३५. तथापरिपन्थविमुत्तस्स पन तस्स उदयब्बयञाणतो पट्ठा
यावानुलोमा तिलक्खणं विपस्सनापरंपराय पटिपज्जन्तस्स न
विपस्सनाञाणानि पटिपदाञाणदस्सनविसुद्धि नाम ॥

३६. तस्सेवं पटिपज्जन्तस्स पन विपस्सना परिपाकमागम्म इदानि
अप्पना उप्पज्जिस्सती ति भवंगं वोच्छिन्दित्वा उप्पन्नमनोद्वारावज्जनानन्त
द्वे तीणि विपस्सनाचित्तानि यं किंचि अनिच्चादिलक्खणमारब्भ
परिकम्मोपचारानुलोमनामेन पवत्तन्ति ॥ या सिखापत्ता, सा सा
नुलोमा संखारुपेक्खा, वुट्ठानगामिनी विपस्सना ति च वुच्चति ।
ततो परं गोत्रभुचित्तं निब्बानमालंबित्वा पुथुज्जनगोत्तमभिभवन्त
अरियगोत्तमभिसंभोन्तं च पवत्तति ॥ तस्सानन्तरमेव मग्गो दुक्ख
सच्चं परिजानन्तो, समुदयसच्चं पजहन्तो, निरोधसच्चं सच्छिकरो
न्तो, मग्गसच्चं भावनावसेन अप्पनावीथिमोतरति ॥ ततो परं द्वे
तीणि फलचित्तानि पवत्तित्वा भवंगपातो व होति ॥ पुन भवंगं वो
च्छिन्दित्वा पच्चवेक्खणञाणानि पवत्तन्ति ॥

मग्गं फलं च निब्बानं पच्चवेक्खति पण्डितो ।
हीने किलेसे सेसे च पच्चवेक्खति वा न वा ॥
छब्बिसुद्धिक्कमेनेवं भावेतब्बो चतुब्बिधो ।
ञाणदस्सनविसुद्धि नाम मग्गो पवुच्चति ॥

अयमेत्थ विसुद्धिभेदो ॥

३७. तत्थ अनत्तानुपस्सना अत्ताभिनिवेसं मुञ्चन्ती सुञ्ञतानुप
स्सना नाम विमोक्खमुखं होति ॥ अनिच्चानुपस्सना विपल्लासनि

१ सी॰ परिपन्थ॰ ।

मित्तं मुञ्चन्तो अनिमित्तानुपस्सना नाम विमोक्खमुखं होति ॥ दुक्खानुपस्सना तण्हापणिधिं मुञ्चन्तो अप्पणिहितानुपस्सना नाम विमोक्खमुखं होति ॥ तस्मा यदि वुट्ठानगामिनी विपस्सना अनत्ततो विपस्सति, सुञ्ञतो विमोक्खो नाम होति मग्गो । यदि अनिच्चतो विपस्सति, अनिमित्तो विमोक्खो नाम । यदि दुक्खतो विपस्सति, अप्पणिहितो विमोक्खो नामा ति च मग्गो विपस्सनागमनवसेन तीणि नामानि लभति । तथा फलं च मग्गागमनवसेन मग्गवीथियं ॥

३८. फलसमापत्तिवीथियं पन यथावुत्तनयेन विपस्सन्तानं यथासकं फलमुप्पज्जमानं पि विपस्सनागमनवसेनेव सुञ्ञतादिविमोक्खो ति च वुच्चति ॥ आरम्मणवसेन पन सरसवसेन च नामत्तयं सब्बत्थ सब्बेसं पि सममेव ॥

अयमेत्थ विमोक्खभेदो ॥

३९. एत्थ पन सोतापत्तिमग्गं भावेत्वा दिट्ठिविचिकिच्छापहानेन पहीनापायगमनो सत्तक्खत्तुपरमो सोतापन्नो नाम होति ॥

४०. सकदागामिमग्गं भावेत्वा रागदोसमोहानं तनुकरत्ता सकदागामी नाम होति, सकिदेव इमं लोकं आगन्त्वा[1] ॥

४१. अनागामिमग्गं भावेत्वा कामराग-ब्यापादानं अनवसेसप्पहानेन अनागामी नाम होति, अनागन्ता[2] इत्थत्तं ॥

४२. अरहत्तमग्गं भावेत्वा अनवसेसकिलेसप्पहानेन अरहा नाम होति, खीणासवो लोके अग्गदक्खिणेय्यो ॥

अयमेत्थ पुग्गलभेदो ॥

---

१ म. आगन्त्वा ॥ २ म. अनागन्त्वा ॥

४३. फलसमापत्तिवीथियं पनेत्थ सब्बेसं पि यथासकफल
साधारणा व ॥ निरोधसमापत्तिसमापज्जनं पन अनागामीनं
अरहन्तानं च लब्भति ॥

४४. तत्थ यथाक्कमं पठमज्झानादिमहग्गतसमापत्तिं समाप
त्वा वुट्ठाय तत्थ गते सङ्खारधम्मे तत्थ तत्थेव विपस्सन्तो याव
किञ्चञ्ञायतनं गन्त्वा ततो परं अधिट्ठेय्यादिकं पुब्बकिच्चं
नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं समापज्जति ॥ तस्स द्विन्नं अप्पना
नानं परतो वोच्छिज्जति चित्तसन्तति ॥ ततो निरोधसमा
नाम होति ॥

४५. वुट्ठानकाले पन अनागामिनो अनागामिफलचित्तं, अर
अरहत्तफलचित्तं एकवारमेव पवत्तित्वा भवङ्गपातो होति ।
परं पच्चवेक्खणञाणं पवत्तति ॥

अयमेत्थ पुग्गलभेदो ॥ निट्ठितो च विपस्सनाकम्मट्ठाननयो

४६. भावेतब्बं पनिच्चेवं भावनाद्वयमुत्तमं ।
पटिपत्तिरसस्सादं पत्थयन्तेन सासने ॥

इति अभिधम्मत्थसङ्गहे कम्मट्ठानसङ्गहविभागो नाम
नवमो परिच्छेदो ॥

चारित्तसोभितविसालकुलोदयेन
सद्धाभिवुड्ढपरिसुद्धगुणोदयेन ।
नम्बव्हयेन पणिधाय परानुकंपं
यं पत्थितं पकरणं परिनिट्ठितं तं ॥
पुञ्ञेन तेन विपुलेन तुमूलसोमं
धञ्ञाधिवासमुदितोदितमायुगन्तं ।
पञ्ञावदातगुणसोभितलज्जिभिक्खू
मञ्ञन्तु पुञ्ञविभवोदयमंगलाय ॥

॥ इति अनुरुद्धाचरियेन रचितं
अभिधम्मत्थसंगहं नाम पकरणं निट्ठितं ॥

सद्दानुक्कमो

[शब्द पछी अने बे दंड (॥) पछी आवता आंकडा परिच्छेद-संख्या दर्शावे छे. एकदंड (।) पछी आवता आंकडा पेरेग्राफसंख्या दर्शावे छे.]

आ

घ

च

छ

ज

छ

ज

प

स

स

गाथानुक्कमो

गाथानुक्कमो

द

न

प

भ

म

य

र

ल

व

स